दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

नवम्बर–दिसम्बर 2023

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर सादर नमन

डेरी सेक्टर की वर्ष 2023 की उपलब्धियां

डेरी कर्मियों को सम्मान

डेरी प्लांट में ऑटोमेशन

जैविक डेरी उत्पादों के लाभ

www.indiandairyassociation.org

KOTHARI GROUP

SINCE 1975

THE TRUSTED BRAND IN DAIRY INDUSTRY

MILK COOLING TANK OPEN TYPE

Available in 100 to 2500 Ltrs.

MILK COOLING TANK CLOSED TYPE

Available in 1000 to 15000 Ltrs.

KK ALUMINIUM MILKCANS

Available in 5 to 50 Ltrs.

NOVALAC FARM FRES MILK PROCESSOR

Capacity - 2000 Ltr. / day

HEATING VAT MACHINE FOR PANEER & CURD

Heating capacity - 200/300 Ltr./hr

KK SS MILKCANS (AISI 304)

Available in 5 to 50 Ltrs.

RAPID CHILLING SYSTEM

KOTHARI GROUP

- **KK CANS & ALLIED PRODUCTS PVT. LTD.**
- **ASSOCIATED DAIRYFAB PVT. LTD.**

B-5, M.I.D.C., Ajanta Road, Jalgaon - 425003, Maharashtra, India.

Tel. : + 91-257-2211210, 2211700, Fax : +91-257-2210950. E-mail : kotharigroup@kkcans.net

ADF

www.malhar.org

Spreading Healthy Smile - Globally

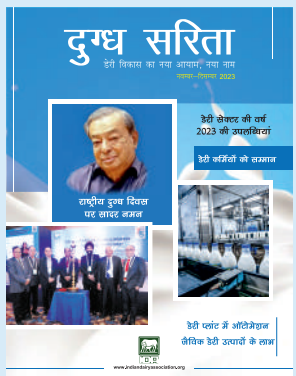

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 6 नवंबर–दिसंबर, 2023

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. आर. एस. सोढ़ी
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
पटना

डॉ. ओमवीर सिंह
उप प्रबंध निदेशक
मदर डेरी फ्रूट्स एंड वेजीटेबल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
झारखंड दुग्ध उत्पादक सहकारी
महासंघ लिमिटेड, रांची

श्री किरीट मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. बी.एस. बैनीवाल
पूर्व प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा
एवं पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
करनाल

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड, गाजियाबाद

प्रकाशक
श्री हरिओम गुलाटी

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क
इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ — 8
वर्ष 2023 में डेरी सेक्टर की उपलब्धियां– उत्पादन में उछाल से सुरक्षा पर चर्चा तक
डॉ. आर. एस. सोढ़ी

रिपोर्ट — 11
आईडीए ने देश भर में मनाया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस
जगदीप सक्सेना

आयोजन — 17
पशुपालन और डेरी विभाग ने गुवाहाटी में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2023 मनाया

सम्मान — 24
गुजरात में गिर गाय की हाईटेक गोशाला को राष्ट्रीय पुरस्कार

तकनीक — 27
उन्नत स्वचालन, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी व इंस्ट्रूमेंटेशन द्वारा डेरी प्रसंस्करण
चित्रनायक, प्रशांत मिंज, खुशबू कुमारी, प्रियंका एवं हिमा जॉन

नवीन — 33
जैविक दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों के लाभ
वंदिता मिश्रा एवं रोहित कुमार जायसवाल

कहानी — 37
यही मेरा वतन
मुंशी प्रेमचंद

कविता, पशुपालन कैलेंडर और अन्य उपयोगी जानकारी

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. आर. एस. सोढ़ी

उपाध्यक्षः श्री ए.के. खोसला और श्री अरुण पाटिल

सदस्य

चयनितः श्री सी.पी. चार्ल्स, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचंद्र चौधरी, श्री चेतन अरुण नारके, श्री राजेश गजानन लेले, श्री अनिल बर्मन, डॉ. बिमलेश मान, डॉ. बिकाश चंद्र घोष, श्री संजीव सिन्हा, श्री बी.वी.के. रेड्डी, एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और श्री अमरदीप सिंह चड्ढा **नामित सदस्यः** डॉ. जी.एस. राजौरिया, श्री एस.एस.मान, श्री सुधीर कुमार सिंह, डॉ. सतीश कुलकर्णी, डॉ. जे.बी. प्रजापति, श्रीमती वर्षा जोशी, डॉ. धीर सिंह और डॉ. मीनेश शाह

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indiandairyassociation.org

क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाएं

दक्षिणी क्षेत्रः डॉ. सतीश कुलकर्णी, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** डॉ. जे.बी. प्रजापति, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः chairman@idawz.org/secretary@idawz.org फोन न. 91 22 49784009 **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** श्री सुधीर कुमार सिंह, अध्यक्ष, c/o एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, डी.के. सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता–700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** श्री अमित मूलचंद व्यास, अध्यक्ष; c/o एस एम सी कॉलेज ऑफ डेरी साइंस, एएयू कैम्पस, आनंद– 388110, गुजरात। ई–मेलः idagscac @ gmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, c/o प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवीएएसयू डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री राहुल सक्सेना, अध्यक्ष; केबिन संख्या 1, भूतल, मनोरम #2, अंबेश्वर कॉलोनी, न्यू सांगानेर रोड, श्याम नगर मेट्रो स्टेशन के पास, जयपुर– 3020191, राजस्थान। ई–मेल : idarajchapter @yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** डॉ. इंद्रजीत सिंह, अध्यक्ष; मकान नंबर 1620, सेकटर–80, एस ए एस नगर, मोहाली– 140308, पंजाब। ई–मेलः secretaryidapb 2023 @ gmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, c/o पूर्व प्रबंध निदेशक, मिथिला मिल्क यूनियन, हाउस नं. 16, मंगलम एन्कलेव, बेली रोड, सगुना एसबीआई के पास, पटना–814146 बिहार, ई–मेलः idabihar2019@gmail.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.के. कनौजिया, अध्यक्ष, c/o डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल–132001 (हरियाणा), फोन : 9896782850, ई–मेलः skkanawjia@rediffmail.com **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** श्री कन्ना के.एस. अध्यक्ष; c/o डेरी विज्ञान विभाग, मद्रास वेटेरनरी कॉलेज, वेपेरी, चेन्नई– 600007, तामिलनाडु **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** प्रो.रवि कुमार श्रीभाष्यम, अध्यक्ष; c/o कॉलेज ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति–517502 ई–मेलः idaap2020@gmail.com **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** डॉ. अरविद, अध्यक्ष; सहायक प्रोफेसर, डेरी विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी–2210051 फोनः 7007314450 ई–मेलः arvind @bhu.ac.in **पश्चिमी यूपी स्थानीय चैप्टरः** डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष, c/o फ्लैट नंबर 1003/8, ज़ेन स्पायर, रामप्रस्थ ग्रीन्स, वैशाली, गाज़ियाबाद– 201010, उत्तर प्रदेश ई–मेल : ttreddy@ arvinddairy.com **झारखण्ड स्थानीय चैप्टरः** श्री पवन कुमार मारवाह, अध्यक्ष; c/o झारखण्ड दुग्ध महासंघ, एफटीसी कॉम्प्लेक्स, धुर्वा सेक्टर–2, रांची, झारखण्ड–834004 ई–मेलः jharkhandida@gmail.com, डॉ. सतीश कुलकर्णी, **तेलंगाना लोकल चैप्टरः** श्री राजेश्वर राव चालीमेडा, अध्यक्ष; द्वारा डोडला डेरी लिमिटेड कार्पोरेट ऑफिस, # 8-2-293/82/A, 270/Q, रोड नंबर 10-C, जुबली हिल्स, हैदराबाद– 500 003, तेलंगाना

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अल्फा मिल्कफूड्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ इंडिया, गुरूग्राम (हरियाणा)

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)

अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)

आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)

बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)

बनासकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लमिटेड, पालनपुर (गुजरात)

बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

बेलगावी जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति यूनियन लि., बेलगावी (कर्नाटक)

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)

बिहार राज्य दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

ब्रिटानिया डेरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

सीपी मिल्क एंड फूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

क्रीमलाइन डेरी प्रोडक्ट्स लिमिटेड (तेलंगाना)

डोडला डेरी लिमिटेड, हैदराबाद (तेलंगाना)

डिजीवृद्धि टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

डेरी टेक इंडिया, पुणे (महाराष्ट्र)

ड्यूक थॉम्पसन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)

ईस्ट खासी हिल्स जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (मेघालय)

एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

फूड और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)

फ्लेवी डेरी सॉल्यूशन्स (गुजरात)

फ्रिक इंडिया लिमिटेड (हरियाणा)

फ्रोमाजेरीज़ बेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

जी.आर.बी. डेरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)

गाँधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गाँधीनगर (गुजरात)

जीईए प्रौसेस इंजीनियरिंग (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)

हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू (कर्नाटक)

आईएफएम इलेक्ट्रोनिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

इंडियन इम्यूनोलौजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

जे. एंड के. दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड (जम्मू)

जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

जॉन बीन टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

झारखंड राज्य दुग्ध संघ, रांची (झारखंड)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कौस्तुभ जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

कीमिन इंडस्ट्रीज़ साउथ एशिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

केरल डेरी फार्मर्स वैलफेयर फंड बोर्ड (केरल)

खम्बेते कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

क्वालिटी लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

लेहुई इंडिया इंजनियरिंग एंड इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

मालाबार रीजनल कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, कोझिकोड (केरल)

मेसे म्यूनकेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

संस्थागत सदस्य

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)

नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड, आणंद (गुजरात)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, तंजावुर (निफ्टेम–टी), तमिलनाडु

नियोजेन फूड एंड ऐनीमल सिक्योरिटी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कोच्चि (केरल)

एनडीआरआई ग्रेजुएट्स एसोसिएसन (हरियाणा)

ओलाम फूड इंग्लेडिमेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)

पराग मिल्क फूड्स लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)

पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)

प्रॉम्प्ट इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)

पोरबंदर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजस्थान सहकारी डेरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

रेड काऊ डेरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

रेप्यूट इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

आर.के. गणपति चेट्टियार, तिरूपुर (तमिलनाडु)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना (बिहार)

सखी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमेटेड, अलवर (राजस्थान)

सीरैप इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)

श्री राधे डेरी फार्म एंड फूड्स लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (नई दिल्ली)

श्रेबर डाइनामिक्स डेरीज़ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

श्री एडिटिव्स (फार्मा एंड फूड्स) प्राइवेट लिमिटेड, गांधी नगर (गुजरात)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

स्टीलैप्स टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)

एस. एस. इक्विपमेंट्स (दिल्ली)

द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)

द पंचमहल जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, (गुजरात)

उमंग डेरीज लिमिटेड (दिल्ली)

वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)

विद्या डेरी, आनंद (गुजरात)

विजय डेरी प्रोडक्ट्स, सूरत (गुजरात)

वार्षिक सदस्य

एबीसी प्रोसेस सोल्यूशन्स प्राइवेट लि. (महाराष्ट्र)

एबीटी इंडस्ट्रीज़, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

एजीलेंट टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

ऐरेन इंटरनेशनल लिमिटेड (मध्य प्रदेश)

एक्वाटेक सिस्टम्स एशिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

अलसफा डेरी मिल्क (तेलंगाना)

ऐटमॉस पावर लिमिटेड (गुजरात)

औटोमिक इंडस्ट्रीज़ (महाराष्ट्र)

अवलानी ब्रदर्स (गुजरात)

एवाइवा इक्विपमेट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)

भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड (महाराष्ट्र)

भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

बी.जी चितले डेरी, सांगली (महाराष्ट्र)

भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)

बर्ग एंड शिमिड्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

संस्थागत सदस्य

ब्री–एयर एशिया प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)
क्लीयर पैक ऑटोमेशन प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ईबीटी स्विस इंजीनियरिंग ए जी (गुजरात)
एपिक डेरी टेक्नोलॉजी (गुजरात)
गोदावरी खोड़े नामदेवरावजी परजाने पाटिल तालुका सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)
गोमती सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला (त्रिपुरा)
गोरमल–वन एलएलपी (महाराष्ट्र)
झंडेवालास फूड्स लिमिटेड (राजस्थान)
हेटसन ऐग्रो प्रोडक्ट्स लि. चेन्नई (तमिलनाडु)
इंदापुर डेरी एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लि. (महाराष्ट्र)
इफको किसान सुविधा लिमिटेड (दिल्ली)
जे एम फिल्ट्रेशन टेक्नोलॉजी (महाराष्ट्र)
जलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (महाराष्ट्र)
जामनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)
झोन वाल्व्स एक्सियम इंड़िया (महाराष्ट्र)
जूमो इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)
के एंड डी कम्युनिकेशन लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
के. आई. एस. ग्रुप (कर्नाटक)
खेमका कार्पोरेट्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
कैरा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
कोठारी कोरोज़न कंट्रोलर्स (गुजरात)
कृष्णावेली सार्म्स (गुजरात)
मार्चिनकेब्रिक इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट)
मेहसाना जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
मॉडर्न डेरीज़ लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)
मदर डेरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)
माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (गुजरात)
मिल्की मिष्ट डेरी फूड प्रा. लिमिटेड (तमिलनाडु)
मूफार्म प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)
एमपी राज्य सहकारी डेरी महासंघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
ऑप्टिक्स टेक्नोलॉजी (दिल्ली)
पोटेंस कंट्रोल्स प्रा. लिमिटेड (महाराष्ट्र)
पूर्णाश्री इक्विपमेट्स (केरल)
क्यूबॉयड आयोटेक प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)
आर एंड डी इंजीनियरिंग कनसलटेंसी (गुजरात)
राजश्री पॉलीपैक लि. (महाराष्ट्र)
सागर पॉलीफिल्म प्रा. लि. (गुजरात)
श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि. (गुजरात)
श्री मोरबी जिला महिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि. (गुजरात)
श्वेतधारा दुग्ध उत्पादक कंपनी लि. (उत्तर प्रदेश)
सीमेन्स लिमिटेड (महाराष्ट्र)
सार्ट स्ट्रिंग सॉल्यूशन्स एलएलपी (उत्तर प्रदेश)
एसआईजी कौम्बीबलॉक इंडिया प्रा. लि. (हरियाणा)
सोमवंशी एनवाइरो इंजीनियरिंग प्रा. लि. (उत्तर प्रदेश)
सनफ्रेश एग्रो इंडस्ट्रीज़ प्रा. लि. (महाराष्ट्र)
सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)
सर्वल इंडिया ऐनीमल न्यूट्रीशन प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)
टेक्नॉइस एस. आर. एल. (गुजरात)
टेट्रापैक इंडिया (महाराष्ट्र)
थर्मोफिशर साइंटिफिक इंडिया प्रा. लि. (महाराष्ट्र)
द मिदनापुर कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, (पश्चिम बंगाल)
द तेलंगाना स्टेट डेरी डेवलपमेंट कोऑपरेटिव फेडरेशन लिमिटेड (तेलंगाना)
वास्टा बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
विनी एंटरप्राइज़ेज़ (गुजरात)
वासिस्टा एंटरप्राइज सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (तेलंगाना)
वैभव प्लास्टो प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग प्रा. लि. (महाराष्ट्र)
वीज़र इंडिया प्रा. लि. (गुजरात)
वीए एक्जिबिशन्स प्रा. लि. (तेलंगाना)
यामिर पैकेजिंग प्रा. लि. (गुजरात)
जैडर्स रिसॉर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)
ज्यूटेक इंजिनियर्स प्रा. लि. (महाराष्ट्र)
ज़ाइडेक्स इंडस्ट्रीज़ प्रा. लि. (गुजरात)

कविता

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी

– महादेवी वर्मा

आँधी आई जोर शोर से,
डालें टूटी हैं झकोर से।
उड़ा घोंसला अंडे फूटे,
किससे दुख की बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

हमने खोला आलमारी को,
बुला रहे हैं बेचारी को।
पर वो चीं–चीं कर्राती है
घर में तो वो नहीं रहेगी!

घर में पेड़ कहाँ से लाएँ,
कैसे यह घोंसला बनाएँ!
कैसे फूटे अंडे जोड़ें,
किससे यह सब बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

पेश है

prompt®

MILKEASY

मोबाइल मिल्किंग मशीन

यह पशुओं के थन को संक्रमण से बचाए और आपका वक्त भी। हमारा प्रयास हमेशा यही रहता है कि पशु रहें सुरक्षित और दूध की गुणवत्ता भी बनी रहे।

दूध रखे शुद्ध | पशुओं के थन को संक्रमण से बचाए | समय की बचत

Prompt Equipments Pvt. Ltd.
7th Floor, Shaligram Corporates, C. J. Road, Iskcon - Ambli Road,
Ahmedabad, Gujarat - 380 058, India.
Ph: 02717 45 1111 / 6111 | www.promptdairytech.com | info@promptdairytech.com
Follow us on

Scan this QR code to know more

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

वर्ष 2023 में डेरी सेक्टर की उपलब्धियां–उत्पादन में उछाल से सुरक्षा पर चर्चा तक

अब, जब वर्ष 2023 विदा ले रहा है तो यह प्रासंगिक और समीचीन हो जाता है कि हम डेरी सेक्टर की इन 12 महीनों की यात्रा और उपलब्धियों पर एक नजर डालें। डेरी उद्योग के लिए वर्ष के अंत का अर्थ केवल वित्तीय आंकड़ों को संग्रहित करना नहीं हैं। यह एक अवसर है पेश आई चुनौतियों और हासिल हुई उपलब्धियों के मूल्यांकन का और भविष्य के लिए रणनीतिक योजनाएं बनाने का भी।

वैश्विक परिदृश्य

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुमान के अनुसार वर्ष 2023 में वैश्विक दूध उत्पादन 1.3 प्रतिशत वृद्धि के साथ 950 मिलियन टन के उच्च स्तर पर पहुंच जाएगा। इसका मुख्य कारण एशिया में दूध उत्पादन में हुई वृद्धि है, इसमें भी प्रमुख से भारत और चीन का योगदान है। दूध की निरंतर अधिक पैदावार और दुधारू पशुओं की संख्या में निरंतर वृद्धि इसके मूल कारण हैं। इससे यूरोप और उत्तरी अमेरिका में डेरी पशुओं के वध की बढ़ती संख्या की भी भरपाई हो रही है। दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील की अग्रणी भूमिका के साथ उत्पादन में कुछ प्रसार की संभावना है, जबकि ओशनिया में आदानों यानी इनपुट्स की लागत में वृद्धि के बावजूद उत्पादन में मामूली बढ़ोतरी की संभावना है। अफ्रीका में दूध उत्पादन में गिरावट की आशंका है, क्योंकि यहां आहार की उपलब्धता में कमी के साथ चारागाहों की दशा भी खराब हो रही है। साथ ही निरंतर संघर्ष के कारण पशुधन भी प्रभावित हो रहा है।

वर्ष 2023 में वैश्विक डेरी व्यापार का आकार लगभग 84 मिलियन टन पर अनुमानित है, जो पहले से एक प्रतिशत कम है। इसका प्रमुख कारण घरेलू डेरी उत्पादन में वृद्धि और अधिक भंडार के कारण चीन द्वारा डेरी आयात में सार्थक कमी करना है। इसी तरह अन्य प्रमुख आयातकों जैसे फिलीपींस, इंडोनेशिया और मलेशिया में घरेलू स्तर पर खाद्य सेवाओं की बिक्री में गिरावट और मुद्रा अवमूल्यन के कारण डेरी आयातों में कमी दर्ज की जा रही है।

इसके विपरीत ब्राजील, मैक्सिको, अलजीरिया और सऊदी अरब में प्रतिस्पर्धात्मक अंतरराष्ट्रीय कीमतों व स्थानीय आपूर्ति में कमी और खाद्य सेवाओं की बिक्री में गिरावट के कारण आयात में वृद्धि की आशा जतायी गयी है। वैश्विक आयात में कमी से अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अर्जेंटीना से निर्यात में गिरावट की संभावना है। जनवरी से सितम्बर, 2023 के बीच आयात में कमी और भंडारण आधिक्य के कारण डेरी उत्पादों की कीमतों में फिर उछाल आया, क्योंकि मांग बढ़ गयी। साथ ही अल–नीनो प्रभाव के कारण पश्चिमी यूरोप से होने वाली आपूर्ति में भी व्यवधान उत्पन्न हुआ, जिसने डेरी उत्पादों की वैश्विक मांग को बढ़ा दिया।

हाल में एफएओ ने विभिन्न क्षेत्रों से होने वाले वैश्विक उत्सर्जन और इसे कम करने के उपायों पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। इसके अनुसार वर्ष 2015 में पशुधन कृषि खाद्य प्रणालियों से प्रतिवर्ष लगभग 6.2 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड के तुल्य उत्सर्जन हो रहा था। यह मानवजनित कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 12 प्रतिशत था, जबकि कुल कृषि खाद्य प्रणाली उत्सर्जन का लगभग 40 प्रतिशत था। वैश्विक पशुधन पर्यावरणीय आकलन मॉडल से प्राप्त ये आंकड़े बताते

हैं कि यदि कोई उपाय नहीं किये गये तो वैश्विक पशुधन उत्सर्जन का स्तर वर्ष 2050 तक 9.1 बिलियन टन तक पहुंच सकता है। इसमें मवेशियों, माँस और दूध सहित, की हिस्सेदारी 62 प्रतिशत के स्तर पर सबसे अधिक है, इसके बाद सुअर (14 प्रतिशत), कुक्कुट (9) प्रतिशत), भैंस (8 प्रतिशत) और छोटे रोमंथी पशुओं (7 प्रतिशत) का स्थान है। उल्लेखनीय रूप से पशुधन उत्सर्जन का लगभग दो–तिहाई भाग मांस उत्पादन से आता है, दूध उत्पादन की हिस्सेदारी 30 प्रतिशत है, और शेष अंडा उत्पादन से आता है।

भारतीय परिरदृश्य

हाल में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर गुवाहाटी में पशुपालन एवं डेरी विभाग, मात्स्यिकी, पशुधन एवं डेरी मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 2023 के लिए पशुपालन से संबंधित मूलभूत आंकड़े जारी किये हैं। इससे देश में पशुपालन सेक्टर का एक व्यापक और समग्र परिदृश्य सामने आता है। इस रिपोर्ट में मार्च, 2022 से फरवरी, 2023 के दौरान पशु समेकित नमूना सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का संकलन किया गया है। इससे वित्तीय वर्ष 2022–2023 के दौरान पशुधन सेक्टर में हासिल महत्वपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

भारत में कुल दूध उत्पादन 230.58 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.83 प्रतिशत अधिक है। इस सार्थक वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति प्रति दिन दूध उपलब्धता अब तक के उच्चतम स्तर 459 ग्राम पर पहुंच गई है, जो पिछले वर्ष के 446 ग्राम से सार्थक रूप से अधिक है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान वार्षिक वृद्धि दर निरंतर मजबूत बनी हुई है, हालंकि इसमें सापेक्ष रूप से गिरावट देखी गई है, जैसे 2018–19 में 6.47 प्रतिशत, 2019–20 में 5.69 प्रतिशत, 2020–21 में 5.8 प्रतिशत और 2021–22 में 5.77 प्रतिशत। उत्तर प्रदेश में देश का सर्वाधिक दूध उत्पादन किया जाता है, जो कुल दूध उत्पादन में 15.72 प्रतिशत का योगदान देता है। दूसरे नंबर पर 14.4 प्रतिशत योगदान के साथ राजस्थान है। दूध उत्पादन में सबसे अधिक वार्षिक वृद्धि दर कर्नाटक में दर्ज की गयी है (8.76 प्रतिशत), इसके बाद पश्चिम बंगाल (8.65 प्रतिशत) और उत्तर प्रदेश (6.99 प्रतिशत) का स्थान है।

इस रिपोर्ट में प्रति पशु प्रति दिन औसत दूध उत्पादन के आंकड़े भी प्रस्तुत किये गये हैं। इसके अनुसार विदेशी और संकर नस्ल के पशुओं से प्रति पशु प्रति दिन औसतन 8.55 किग्रा. दूध उत्पादन प्राप्त होता है, जबकि देशी और अन्य अवर्णित नस्लों से केवल 3.44 किग्रा. दूध प्रति दिन प्रति पशु प्राप्त होता है। इन आंकड़ों की पिछले वर्ष से तुलना करने पर पता चला कि विदेशी या संकर नस्लों से दूध उत्पादन में 3.75 प्रतिशत वृद्धि हुई, जबकि देशी व अवर्णित नस्लों के दूध उत्पादन में 2.63 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई। दूध उत्पादन की कुल वृद्धि में भैंसों ने पिछले वर्ष की तुलना में 3.69 प्रतिशत बढ़ोतरी के साथ सार्थक योगदान किया। कुल दूध उत्पादन में भैंस, गाय और बकरी का योगदान क्रमशः 45 प्रतिशत, 52 प्रतिशत और 3 प्रतिशत बना रहा। गायों द्वारा दूध उत्पादन में विदेशी और संकर नस्लों ने 32 प्रतिशत का योगदान किया, जबकि देशी और अवर्णित नस्लों का योगदान लगभग 20 प्रतिशत रहा। बकरी ने कुल दूध उत्पादन में देश भर में 3.30 प्रतिशत का योगदान किया।

इन आंकड़ों से भारत के पशुधन सेक्टर के विकास और गतिशीलता की झलक दिखाई देती है, जिससे आज कुल दूध उत्पादन में वृद्धि के साथ प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता भी तेजी से बढ़ रही है। वार्षिक वृद्धि दर से इस सेक्टर के सतत् और मजबूत प्रदर्शन की पुष्टि होती है, और यह देश की कृषि अर्थव्यवस्था में पशुधन के महत्व को रेखांकित करती है।

वर्ष के अंत के साथ भारतीय डेरी उद्योग के समक्ष अनेक चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं। हमें स्वादिष्ट, स्वास्थ्यप्रद और सुरक्षित डेरी उत्पादों का उत्पादन करना है। व्यापक वैश्विक बाजार में नये अवसरों की खोज कर रहे भारतीय डेरी उद्योग के लिए ऐसा करना एक अनिवार्यता है। लगभग 60 करोड़ लीटर दूध का प्रतिदिन उत्पादन कर रहे डेरी उद्योग के समक्ष डेरी उत्पादों की सुरक्षा और गुणवत्ता बनाये रखना एक बड़ी चुनौती है। इस महत्वपूर्ण पहलू पर विचार–विमर्श करने के लिए इंडियन डेरी एसोसिएशन ने 15 दिसंबर, 2023 को नई दिल्ली के होटल इरोज में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया, जिसका विषय उद्योग व प्रशासकों के समक्ष सुरक्षित डेरी उत्पादों के उत्पादन की चुनौती पर केंद्रित था।

आईडीए के अध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा विचार गोष्ठी का शुभारंभ

इस वैचारिक गोष्ठी की दो पैनल चर्चाओं में दूध और दूध उत्पादों के पोषण लाभों और उपभोक्ताओं के लिए इनकी सुरक्षा के पहलू पर चर्चा की गयी। डेरी उद्योग के विशेषज्ञों, प्रशासकों और अन्य संबंधितों ने मिलकर सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार–विमर्श किया, अपने अनुभव साझा किये और अपनी राय सामने रखी। डेरी उत्पादों के उत्पादन और वितरण से जुड़े सुरक्षा मानकों को सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियां और उपाय भी सुझाये गये।

विचार गोष्ठी में डेरी उत्पादों की सुरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर गहराई से चिंतन–मनन किया गया और ऐसे उपाय खोजने के प्रयास किये गये, जिनसे उपभोक्ताओं के लिए इनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। विचार गोष्ठी ने एक ऐसा मंच प्रदान किया, जहां आपसी सहयोग विकसित हो सके और विशेषज्ञता की साझेदारी करके सुरक्षा मानकों को सुनिश्चित करने की उपयुक्त तथा व्यावहारिक रणनीतियाँ बनायी जा सकें।

आईडीए के गुजरात राज्य चैप्टर ने 16 दिसंबर, 2023 को अमूल डेरी, आनंद में गोपशुओं में लिंग चयनित वीर्य और भ्रूण स्थानांतरण प्रौद्योगिकी पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

भारतीय डेरी पशुओं की अपेक्षाकृत कम उत्पादकता को देखते हुए यह विचार गोष्ठी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जो इस क्षेत्र को विस्तार और मजबूती देगी। प्रतिष्ठित विशेषज्ञों की अध्यक्षता में संपन्न इस गोष्ठी में लगभग 300 प्रतिभागियों ने भागीदारी की, जिसमें विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों सहित मुख्य रूप से पशु चिकित्सक सम्मिलित थे। इस मंच ने सभी को आपसी सहयोग और ज्ञान की साझेदारी का अवसर प्रदान किया।

ज्ञान के प्रसार के साथ इस संगोष्ठी ने औद्योगिक क्षेत्र के विशेषज्ञों और व्यवसायियों को आपसी सहयोग और साझेदारी बढ़ाने का अवसर प्रदान किया। आशा है इससे गोपशुओं में लिंग चयनित वीर्य और भ्रूण स्थानांतरण की तकनीक को बढ़ावा मिलेगा और इनकी पूर्ण क्षमता सामने आ सकेगी। निःसंदेह आईडीए द्वारा उठाये गये ये कदम भारतीय डेरी उद्योग को नये विकास की ओर अग्रसर करेंगे।

(आर. एस. सोढ़ी)

रिपोर्ट

आईडीए ने देश भर में मनाया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस

डॉ. जगदीप सक्सेना, संपादक, दुग्ध सरिता

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) के राजधानी दिल्ली स्थित मुख्यालय, इसके विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों और अनेक चैप्टर्स द्वारा राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर कार्यक्रम आयोजित किये गये। यह विशेष दिवस प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज़ कुरियन की जन्म जयन्ती के अवसर पर मनाया जाता है। मुख्यालय में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के समारोह का आयोजन 26 नवंबर को हाइब्रिड मोड में किया गया। आईडीए (उत्तरी क्षेत्र) के अध्यक्ष डॉ. एस. एस. मान ने समारोह की अध्यक्षता की, जबकि आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने समारोह में गुवाहाटी से वर्चुअल भागीदारी की। डॉ. सोढ़ी ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के उपरांत महात्मा गांधी के बाद डॉ. वर्गीज़ कुरियन दूसरे ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने बहुत बड़ी आबादी के जीवन को प्रभावित किया। उनके प्रयासों के कारण आज आठ करोड़ से ज्यादा भारतीय डेरी किसान परिवार डेरी सेक्टर से अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। हम सभी को डॉ. कुरियन के बताये रास्ते पर आगे बढ़कर देश के विकास में अपना योगदान करना चाहिए।

डॉ. मान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में एनडीआरआई में बिताये अपने छात्र जीवन की याद करते हुए कहा कि उस समय हम देश में दूध की कमी की चर्चा किया करते थे। वर्ष 1970 में डॉ. कुरियन ने ऑपरेशन फ्लड की शुरूआत की, और आज भारत विश्व का शीर्ष दूध उत्पादक है। डॉ. कुरियन का एक सपना था, उन्होंने उस सपने को जीवंत करने के लिए कड़ी मेहनत और लगन से काम किया। हमें उनकी विरासत को जारी रखते हुए नई पीढ़ी को सौंपना होगा। समारोह की विशिष्ट अतिथि और आईडीए की सीईसी सदस्य व आईसीएआर के कृषि शिक्षा विभाग की सहायक महानिदेशक

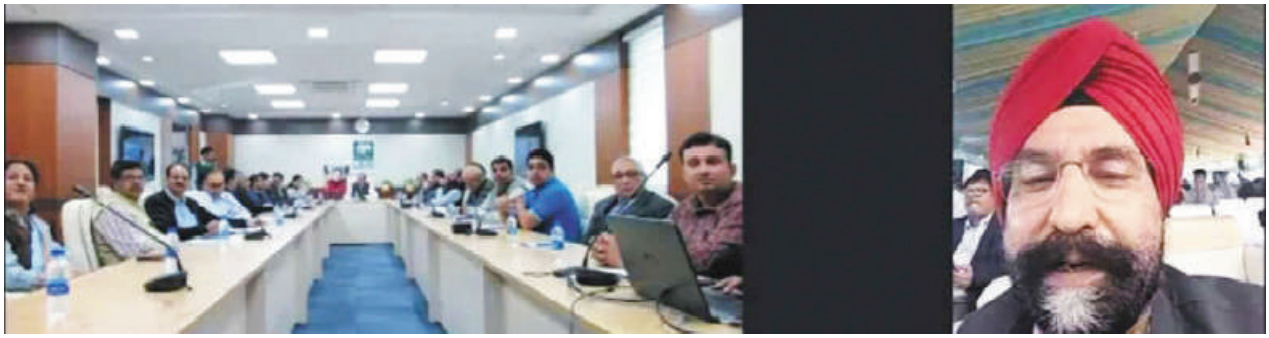

(ईपी एवं एचएस) डॉ. बिमलेश मान ने दूध के व्यापार और पोषण लाभों की चर्चा करते हुए कहा कि दूध की पौष्टिकता का जनमानस के बीच प्रसार होना चाहिए। आजकल बाजार में निहित स्वार्थों के कारण दूध के बारे में भ्रांतियां फैलायी जा रहीं हैं, जिनका वैज्ञानिक तथ्यों के साथ खंडन आवश्यक है। उन्होंने बताया कि अमेरिकन सोसइटी फॉर न्यूट्रीशन के एक सम्मेलन में प्रस्तुत वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार वनस्पति–आधारित पेय गाय के दूध के समान पौष्टिक नहीं होते हैं। यह जानकारी उपभोक्ता तक पहुंचनी चाहिए। गाय के दूध पर हुए वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चला है कि इसके सेवन से हृदय संबंधी रोगों, टाइप–2 डायबिटीज, ऑस्टियोपोरोसिस, मलाशय के कैंसर और अल्जाइमर रोग में उपचारात्मक लाभ मिलता है। डॉ. मान ने एक रोचक अनुसंधान का उल्लेख करते हुए बताया कि यदि 60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति प्रतिदिन तीन कप दूध पियें तो उनका मस्तिष्क युवा बना रहता है। उन्होंने सुझाव दिया कि आईडीए को दूध की पोषणिक गुणवत्ता पर एक मोनोग्राफ प्रकाशित करना चाहिए और इसका अधिकतम प्रसार करना चाहिए।

'दुग्ध सरिता' के संपादक डॉ. जगदीप सक्सेना ने इस अवसर पर देश के करोड़ों दूध उत्पादकों और उपभोक्ताओं का बधाई देते हुए कहा कि राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाने का प्रस्ताव आईडीए द्वारा दिया गया था, इसलिए आज का दिन हमारे लिए विशेष गर्व का क्षण है। आज अनेक सरकारी व गैर–सरकारी संस्थानों, डेरी संगठनों, शिक्षण संस्थानों के अलावा भारत सरकार भी राष्ट्रीय दुग्ध दिवस को प्रमुखता से मनाती है। सरकार द्वारा इस दिन डेरी सेक्टर को अनेक पुरस्कार व सम्मान भी प्रदान किये जाते हैं। दूध के पोषण लाभों की जानकारी आमजन तक पहुंचाने के लिए इस प्रकार के आयोजनों की आज अधिक आवश्यकता है। विशेषकर युवा पीढ़ी को इस महत्वपूर्ण और लाभकारी जानकारी की अधिक आवश्यकता है। आईडीए को अपने प्रकाशनों में दूध के पोषण लाभों की जानकारी नियमित रूप से प्रकाशित करनी चाहिए। डॉ. सक्सेना ने भारतीय डेरी और डेरी किसानों के विकास व कल्याण में डॉ. कुरियन के अहम् पड़ावों का उल्लेख किया। डॉ. कुरियन द्वारा स्थापित अनेक संस्थाओं के योगदान की चर्चा करते हुए उन्हें संस्थान निर्माता के रूप में याद किया।

सभा में उपस्थित डेरी विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और डेरी सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों ने भारतीय डेरी के विकास और चुनौतियों का उल्लेख किया तथा डॉ. कुरियन के योगदानों की सराहना की।

आईडीए के महासचिव श्री हरिओम गुलाटी ने अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए आईडीए की मुख्य गतिविधियों और उपलब्धियों पर प्रस्तुति दी। साथ ही भविष्य की योजनाओं का उल्लेख भी किया।

बीएचयू में समारोह का आयोजन

ग्रामीण सम्मेलन

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में विशेष समारोह

आईडीए (पूर्वी यूपी लोकल चैप्टर) और डेरी विज्ञान व खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बीएचयू ने राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर संयुक्त रूप से 'वैश्विक परिदृश्य में गहन समेकित डेरी विकास' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया (26–30 नवंबर, 2023)। यह आईडीए की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ और डॉ. कुरियन की 102वीं जन्म जयंती मनाने का अवसर भी था। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के कुलाधिपति डॉ. पंजाब सिंह ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने उद्बोधन में डेरी उद्योग के सतत् विकास और डेरी में व्यर्थ निपटान की उचित व्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया। आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने अपने वर्चुअल संबोधन में पूर्वी उत्तर प्रदेश में डेरी सेक्टर की चुनौतियों और इनके संभावित समाधान पर जोर दिया।

प्रथम तकनीकी सत्र में मदर डेरी, वाराणसी के एमडी श्री आर. एस. सैगल ने डेरी सेक्टर में उद्यमिता के विकास और महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि यह गतिविधि क्षेत्र के आर्थिक विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकती है। आईडीए (उत्तरी क्षेत्र) के सचिव डॉ. आई. के. नारंग ने आयुर्वेद और आधुनिक डेरी विज्ञान के बीच गहरे संबंधों को भी उजागर किया। गाय–प्रेमी एवं वाराणसी के अनेक सामाजिक संगठनों के प्रमुख श्री केशव जालान ने डेरी में उद्यमिता विकास की संभावनाओं और इसकी सफलताओं के बारे में प्रेरणाप्रद व्याख्यान किया। उन्होंने विभाग को गोबर से ईंधन की 'स्टिक्स' बनाने की मशीन उपहार में दी।

दूसरे सत्र में आईडीए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जी. एस. राजौरिया ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में डेरी विकास के लिए एक प्रभावी रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने डेरी को रोजगार के अवसर के रूप में विकसित करने पर जोर दिया। आईडीए पूर्वी यूपी लोकल चैप्टर के समन्वयक डॉ. राजा रत्नम ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए इस सम्मेलन के विषय और महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन डॉ. कुरियन के सपनों को साकार करने की ओर एक अहम् कदम है। इस बीच 29 नवंबर को डॉ. रत्नम के समन्वय में जौनपुर के एक भीतरी गांव में रोड शो और सामुदायिक भवन में ग्रामीण सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य ग्रामीणों को डेरी के आधुनिक आयामों के प्रति जागरूक बनाना था। ग्रामीण सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री विरेन्दर राय, अध्यक्ष, दूध सहकारी समिति, म्यूरोल ने अपने बिहार के अनुभव की साझेदारी करते हुए बताया कि एनडीडीबी और गांव के प्रधान तथा अन्य संगठनों के सहयोग से बिहार में डेरी व्यवसाय और डेरी किसानों की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। इसे पूर्वी उत्तर प्रदेश मे दोहराया जा सकता है। डेरी को संगठित क्षेत्र के रुप में विकसित करने से दूध उत्पादकों, उद्यमियों उपभोक्ताओं आदि सभी को लाभ होगा।

क्षेत्र के खंड विकास अधिकारी श्री राकेश मिश्रा ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि आईडीए तथा अन्य संबंधित एजेंसियों को इस क्षेत्र में डेरी के विकास के लिए संगठित प्रयास करने चाहिए।

भारत सरकार व राज्य सरकार के प्रतिनिधियों, डेरी वैज्ञानिकों तथा विशेषज्ञों, दूध सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों, और डेरी उद्यमियों व डेरी किसानों ने अपने विचारों व भागीदारी से सम्मेलन को सफल एवं प्रभावी बनाया।

आईडीए पंजाब राज्य चैप्टर द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन

आईडीए पंजाब राज्य चैप्टर ने 25 नवंबर, 2023 को चंडीगढ़ में 'बेहतर मानव स्वास्थ्य में दूध और दूध उत्पादों की

डॉ. राजौरिया को सम्मान

भूमिका' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया। आईडीए उत्तरी क्षेत्र पंजाब चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. इंद्रजीत सिंह ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए हमारे दैनिक आहार में दूध और दूध के महत्व पर प्रकाश डाला। आईडीए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जी. एस. राजौरिया ने आईडीए की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा के अहम् पड़ावों पर चर्चा की और देश के डेरी विकास में इसके योगदान को रेखांकित किया। इस अवसर पर आईडीए–पंजाब राज्य चैप्टर द्वारा डॉ. राजौरिया को 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। मिल्कफेड पंजाब के एमडी डॉ. अमल कुमार गर्ग, आईएएस ने अपने मुख्य संबोधन में भारत में दूध उत्पादन में हुई असाधारण वृद्धि में डॉ. कुरियन के योगदान को याद किया और सराहना की। श्री एस. एस. मान, अध्यक्ष, आईडीए–उत्तरी क्षेत्र ने अपने व्याख्यान में किसानों के लिए दूध की बेहतर कीमत, गुणवत्ता में सुधार, उत्पाद विकास में नवोन्मेष और उपभोक्ताओं के बीच दूध और इसके उत्पादों की स्वीकार्यता बढ़ाने जैसे अहम् पहलुओं पर जोर दिया। तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों ने दूध और दूध और दूध उत्पादों पर उपयोगी जानकारी दी। धन्यवाद ज्ञापन आईडीएए उत्तरी क्षेत्र पंजाब चैप्टर के सचिव श्री वरिन्द्र सिंह बाघा ने प्रस्तुत किया।

हरियाणा में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

आईडीए के हरियाणा राज्य चैप्टर ने करनाल गांव के छात्रों और आमजनों के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें मानव जीवन में दूध के महत्व और लाभों की जानकारी दी गई। इसमें 300 से अधिक ग्रामीणों ने भागीदारी की, जिसमें 250 छात्र शामिल थे। आईडीए हरियाणा चैप्टर के अध्यक्ष और पूर्व प्रतिष्ठित वैज्ञानिक (डेरी प्रौद्योगिकी) डॉ. एस. के. कनवजिया ने मुख्य अतिथि तथा प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के महत्व की जानकारी दी। उन्होंने डॉ. कुरियन के व्यक्तित्व और कृत्तित्व की चर्चा करते हुए बताया कि वह एक सामाजिक उद्यमी थे, जिनके 'बिलियन–लीटर' विचार ने डेरी फार्मिंग को देश का सबसे बड़ा आत्मनिर्भर व सतत् उद्योग बनाया। डेरी सेक्टर ग्रामीण क्षेत्र का सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है और कुल ग्रामीण आमदनी का लगभग एक–तिहाई भाग इससे प्राप्त होता है। उनके प्रयासों से वर्ष 1998 में भारत विश्व का सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश बन गया।

समारोह के मुख्य अतिथि और आईडीए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जी. एस. राजौरिया ने दूध और दूध उत्पादों के लाभकारी गुणों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दूध और दूध उत्पादों के नियमित सेवन से ऑस्टियोपोरोसिस रोग की रोकथाम होती है और हड्डी टूटने का जोखिम कम हो जाता है। दूध के सेवन से शरीर का वजन बढ़ने पर रोक लगती है, जो व्यक्ति को 'मोटापा' का शिकार होने से बचाता है। इससे डायबिटीज और हृदय रोगों का जोखिम भी कम होता है। दूध को इसके अनेक नये–पुराने उत्पादों के रूप में आसानी से दैनिक आहार में शामिल किया जा सकता है। अनेक अध्ययनों से पता चला है कि यदि दिन में तीन बार दूध, योगर्ट और चीज़ का सेवन किया जाए जो हाइपरटेंशन और कोलोनो–रेक्टल कैंसर पर रोक लगने की बात भी सामने आयी है। दूध दांतों की खराबी पर भी रोक लगाने में सक्षम है। दूध के किण्वित पेयों का उपयोग प्रो–बायोटिक्स की तरह किया जाता है। डॉ. राजौरिया ने दूध को एक संपूर्ण, पौष्टिक और स्वास्थ्यप्रद आहार के रूप में स्वीकार करने की सिफारिश की। डॉ. महेन्दर सिंह, प्रतिष्ठित वैज्ञानिक व उपाध्यक्ष आईडीए हरियाणा चैप्टर ने छात्रों से कहा कि दूध उत्पादन और प्रसंस्करण की व्यावहारिक जानकारी के लिए उन्हें डेरी संस्थानों और महाविद्यालयों में जाकर देखना चाहिए। श्री उपनीत राजौरिया, सदस्य–राज्य कार्यकारिणी समिति, हरियाणा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आईडीए–दक्षिण क्षेत्र में वेबिनार का आयोजन

आईडीए–दक्षिण क्षेत्र ने पूर्व छात्र संघ, एसआरएस–एनडीआरआई और एसआरएस–एनडीआरआई, बेंगलुरू के साथ मिलकर संयुक्त रूप से 26 नवंबर, 2023 को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर एक ऑन लाइन वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थानों

हरियाणा में आयोजन

के पदाधिकारियों और वैज्ञानिकों ने भागीदारी की। डॉ. बांदला श्रीनिवास, अध्यक्ष, पूर्व–छात्र संघ और डॉ. अरिंदस धाली, अध्यक्ष, एसआरएस एनडीआरआई ने डॉ. कुरियन का स्मरण करते हुए उनके योगदानों की चर्चा की। डॉ. सिरिल दास, नोवोटेक सॉल्युशन्स, ऑस्ट्रेलिया ने डेरी प्लांट इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अपने अनुभवों की साझेदारी करते हुए जानकारीपूर्ण और सारगर्भित प्रस्तुति दी, जो निश्चित रूप से छात्रों और अन्य संबंधितों के लिए उपयोगी होगी। पूर्व–छात्र संघ के सचिव डॉ. मुकुंद ए. कटाक्टलवेयर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया, आईडीए–दक्षिण क्षेत्र के सचिव डॉ. एस. सुभाष ने ऑन लाइन कार्यक्रम का संयोजन किया, और पूर्व–छात्र संघ की कोषाध्यक्ष, डॉ. मोनिका शर्मा ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

पालवारम '23 का आयोजन

आईडीए–केरल चैप्टर ने वर्गीज़ कुरियन इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी एंड फूड टेक्नोलॉजी, केरल पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के पुरा छात्र संघ (2023–2024) के साथ मिलकर संयुक्त रूप से राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर पालवारम '23 नामक एक सप्ताह के उत्सव का आयोजन किया। इसके अंतर्गत अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्थान के छात्रों ने 24 नवंबर को एक जागरूकता नाटिका प्रदर्शित की, जिसमें दूध से जुड़ी अनेक भ्रांतियों को दूर किया गया। बी. टेक. के छात्रों और कर्मचारियों के लिए 26 तारीख को 'ट्रेज़र हंट' प्रतियोगिता आयोजित की गई। अगले दिन संस्थान के छात्रों ने डॉ. कुरियन के योगदानों पर स्वयं द्वारा निर्मित विडियो प्रस्तुति को संस्थान के इंस्टाग्राम पेज और सोशल मीडिया के अन्य मंचों पर पोस्ट किया। डेरी किसानों मे जागरूकता के प्रयास के लिए 27 नवंबर को एक स्किट प्रस्तुत की गयी। अठ्ठाइस तारीख को जागरूकता कार्यक्रम के साथ स्कूली बच्चों के लिए क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गयी और छात्रों व डेरी किसानों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। समापन समारोह के आयोजन के साथ उत्सव संपन्न हुआ।

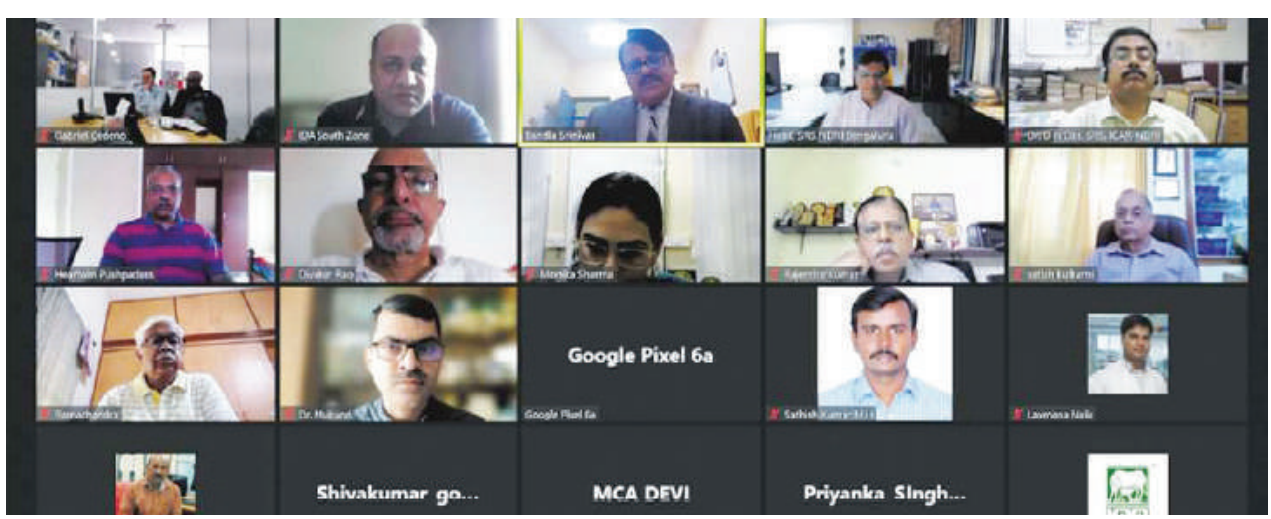

आईडीए–पूर्वी क्षेत्र द्वारा आयोजन

आईडीए–पूर्वी क्षेत्र द्वारा कोलकाता में 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया गया। एनडीडीबी के अधिकारियों, सरकारी पॉलीटेक्निक और कॉलेज आदि के छात्रों ने इस विशिष्ट आयोजन में भागीदारी की। विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यानों में डॉ. कुरियन के कार्यों तथा योगदानों की सराहना की और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

आईडीए बिहार राज्य चैप्टर द्वारा पटना में आयोजन

कार्यक्रम का आयोजन आईडीए–पूर्वी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंह के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

आईडीए बिहार राज्य चैप्टर के कार्यालय में अध्यक्ष श्री धमेंद्र कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन किया गया। बिहार राज्य चैप्टर के सदस्यों, कार्यकारिणी के सदस्यों और अन्य विशेषज्ञों तथा अधिकारियों ने इस आयोजन में भागीदारी की। एसजीआईडीटी, पटना के शिक्षकों तथा छात्रों ने भी कार्यक्रम में भागीदारी की और अपना योगदान दिया। सभी प्रतिभागियों ने डॉ. कुरियन के योगदानों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

आईडीए–झारखंड लोकल चैप्टर ने मनाया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस

आईडीए–झारखंड लोकल चैप्टर ने झारखंड मिल्क फेडेरेशन (जेएसएफ) के साथ मिलकर संयुक्त रूप से रांची में 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुधीर कुमार सिंह और जेएमएफ के जनरल मैनेजर व आईडीए झारखंड लोकल चैप्टर के अध्यक्ष श्री पवन कुमार मारवाह ने किया। श्री सिंह ने डॉ. वर्गीज़ कुरियन के साथ अपने काम करने के अनुभवों को साझा किया और भारत को विश्व का नम्बर एक दूध उत्पादक बनाने में सामने आयी चुनौतियों का उल्लेख किया। श्री मारवाह ने कर्मचारियों को सहकारी समितियों के महत्व की जानकारी दी और श्वेत क्रांति की सफलता में डॉ. कुरियन के योगदानों को विस्तार से बताया।

दुग्ध दिवस का आयोजन पांच जगहों पर किया गया – रांची, कोलकाता, गुवाहाटी, भुवनेश्वर और बिहार। रांची में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का समारोह मेधा डेरी प्लांट के परिसर में आयोजित किया गया। मेधा डेरी झारखंड राज्य सरकार से संबद्ध सहकारी समिति है, जिसका संचालन एनडीडीबी द्वारा किया जाता है। इससे 50,000 से अधिक डेरी किसान सीधे जुड़े हैं और यह प्रतिदिन 2.50 लाख लीटर दूध की मार्केटिंग और प्रसंस्करण करती है।

दूध एक संपूर्ण आहार,
मानव स्वास्थ्य का आधार।

आयोजन

पशुपालन और डेरी विभाग ने गुवाहाटी में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया

भारत सरकार के पशुपालन और डेरी विभाग ने 26 नवंबर को गुवाहाटी में ''राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2023'' मनाया। यह विशेष दिन ''भारत में श्वेत क्रांति के जनक'' डॉ वर्गीज़ कुरियन की जन्म जयंती के सम्मान में मनाया जाता है, जो हमारे देश में डेरी क्षेत्र की उपलब्धियों और महत्व पर प्रकाश डालता है।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेरी मंत्री, श्री परषोत्तम रुपाला मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए, जबकि कृषि, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा मंत्री, असम सरकार, श्री अतुल बोरा. परिवहन, मत्स्य पालन और उत्पाद शुल्क मंत्री, असम सरकार, श्री परिमल शुक्लाबैद्य. पशुपालन एवं पशु चिकित्सा मंत्री, अरुणाचल प्रदेश, श्री तागे ताकी. असम के सांसद और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित हुए।

विभिन्न पुरस्कारों के विजेताओं को सम्मानित करते हुए, केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेरी मंत्री श्री रुपाला ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत विश्व में दूध उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी है और वैश्विक बाजारों में अपनी पहचान बना रहा है। मंत्री ने डेरी क्षेत्र को बढ़ावा देने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और इस क्षेत्र को विकसित करने के लिए उद्यमशीलता के प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारा समग्र दृष्टिकोण डेरी क्षेत्र के घरेलू विकास और अंतरराष्ट्रीय विस्तार, दोनों को बढ़ावा देने के साथ–साथ देश के युवाओं की अभिनव भावना को पोषित करने की देश की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

कार्यक्रम के दौरान, केंद्रीय मंत्री श्री रुपाला ने ''बुनियादी पशुपालन सांख्यिकी 2023'' जारी की जो 2022–23 में दूध, अंडा, मांस और ऊन उत्पादन को दर्शाती है और एक कॉफी टेबल बुक– ''मिल्की वे ओवर द इयर्स'' को जारी किया, जो डेरी क्षेत्र में 10 वर्षों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है। केंद्रीय मंत्री श्री रुपाला ने असम राज्य के लिए ए–हेल्प (पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य और विस्तार के लिए मान्यता

क्र.सं.	श्रेणी	रैंक सहित राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार 2023 के विजेताओं के नाम
1.	स्वदेशी गाय/भैंस नस्ल का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ डेरी किसान	प्रथम – श्री राम सिंह, करनाल, हरियाणा दूसरा – श्री नीलेश मगनभाई अहीर, सूरत, गुजरात तीसरा – श्रीमती बृंदा सिद्धार्थ शाह, वलसाड, गुजरात तीसरा – श्री राहुल मनोहर खैरनार, नासिक, महाराष्ट्र
2.	सर्वश्रेष्ठ डेरी सहकारी समिति/दुग्ध उत्पादक कंपनी/डेरी किसान उत्पादक संगठन	पहला – पुलपल्ली क्षीरोलपदक सहकारण संगम डी लिमिटेड, वायनाड, केरल दूसरा – टीएम होसूर मिल्क प्रोड्यूसर्स कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, सहकारी समिति, मांड्या, कर्नाटक तीसरा – एमएस 158 नाथमकोविलपट्टी दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति, डिंडीगुल, तमिलनाडु
3.	सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (एआईटी)	प्रथम – श्री सुमन कुमार साह, अररिया, बिहार दूसरा – श्री अनिल कुमार प्रधान, अनुगुल, ओडिशा तीसरा – श्री मुद्दपु प्रसादराव, श्रीकाकुलम, आंध्र प्रदेश

प्राप्त एजेंट) प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया और पहले प्रशिक्षण बैच के बीच किट वितरित किया।

श्री अतुल बोरा ने पूरे राज्य में सेक्स सॉर्टेड सीमेन की सेवा शुरू करने और दूध उत्पादन को बढ़ावा देकर किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए असम सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि असम सरकार बाजार संपर्क विकसित करने और मूल्य वर्धित दुग्ध उत्पादों को विकसित करने की कोशिश कर रही है। आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने समारोह में सक्रिय भगीदारी की।

पशुपालन और मत्स्यपालन विभाग की सचिव, सुश्री अलका उपाध्याय ने अपने संबोधन में कहा कि डेरी क्षेत्र मजबूती से आगे बढ़ रहा है और हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार देश में स्वदेशी मवेशी, भैंस की नस्लें पालने वाले सर्वश्रेष्ठ डेरी किसान, सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और सर्वश्रेष्ठ डेरी सहकारी समिति (डीसीएस), दूध उत्पादक कंपनी, डेरी किसान उत्पादक संगठन के विजेताओं को प्रदान किया गया।

प्रत्येक श्रेणी में प्रथम पुरस्कार के लिए 5 लाख रुपये, दूसरे स्थान के लिए 3 लाख रुपये दिए जाते हैं। पहली दो श्रेणियों यानी सर्वश्रेष्ठ डेरी किसान और सर्वश्रेष्ठ डीसीएस/एफपीओ/एमपीसी में तीसरी रैंक के लिए योग्यता प्रमाण–पत्र और एक स्मृति चिन्ह के साथ 2 लाख रुपये दिए जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (एआईटी) श्रेणी के मामले में तीसरी रैंक के विजेता को योग्यता प्रमाण–पत्र और एक स्मृति चिन्ह दिया जाता है।

इस कार्यक्रम में संविधान दिवस की शपथ और ''मन की बात'' के 107वें संस्करण की लाइवस्ट्रीमिंग भी की गई।

कार्यक्रम से पहले, पशु चिकित्सा छात्रों और असम पशु चिकित्सा कॉलेज की एनसीसी इकाई, राज्य पशुपालन विभाग, एनडीडीबी और वामुल की सक्रिय भागीदारी के साथ सुबह में एक वॉकथॉन और योग सत्र का भी आयोजन किया गया।

अभिनव स्टार्टअप, उद्यमियों और दुग्ध संघों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी और ''सतत दूध उत्पादन के लिए फीड और चारा'' पर एक तकनीकी सत्र का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में असम और अन्य उत्तर–पूर्व राज्यों के 3,000 से ज्यादा किसानों ने हिस्सा लिया। ■

यूपी में 25 गाय से खोलिए डेयरी, सरकार देगी 50 प्रतिशत अनुदान, इन जिलों के गोपालकों को प्राथमिकता

उत्तर प्रदेश सरकार ने नन्द बाबा मिशन के तहत नन्दिनी कृषक समृद्धि योजना का शासनादेश जारी कर दिया है। इस योजना के तहत 25 गायों की डेयरी खोलने पर राज्य सरकार 50 प्रतिशत का अनुदान देगी।

यूपी में सरकार ने गौवंशीय पशुओं की नस्ल सुधार और दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि के लिए नंद बाबा मिशन के तहत नंदिनी कृषक समृद्धि योजना का शासनादेश जारी कर दिया है। इस योजना से जहां राज्यभर में उच्च दुग्ध उत्पादन क्षमता के गौवंश में सुधार होगा, तो वहीं दूसरी ओर पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में भी बढ़ोत्तरी होगी। योजना के पहले चरण में सरकार लाभार्थी को 25 दुधारु गायों की 35 इकाइयां स्थापित करने के लिए गायों की खरीद से लेकर उनके संरक्षण और भरण–पोषण जैसे मदों में सब्सिडी देगी। यह सब्सिडी तीन चरणों में दी जाएगी। वहीं, शुरुआती चरण में यह योजना राज्य के दस मंडल मुख्यालयों के शहरों क्रमशः अयोध्या, गोरखपुर, वाराणसी, प्रयागराज, लखनऊ, कानपुर, झांसी, मेरठ, आगरा और बरेली में संचालित की जाएगी।

तीन चरणों में दिया जाएगा योजना का लाभ

दुग्ध आयुक्त और मिशन निदेशक शशि भूषण लाल सुशील ने बताया कि प्रदेश दुग्ध उत्पादन में देश में पहले स्थान पर है, जबकि प्रदेश में प्रति पशु दुग्ध उत्पादकता कम है। इसकी मुख्य वजह राज्य में उच्च गुणवत्तायुक्त दुधारु पशुओं की कमी होना है। इसी कमी को पूरा करने और उन्नत नस्ल के अधिक से अधिक दुधारू गौवंश की इकाइयों की स्थापना के लिए नंदिनी कृषक समृद्धि योजना का शुभारंभ किया गया है। योजना के तहत दुधारू गायों में साहीवाल, गिर, थारपारकर और गंगातीरी प्रजाति की गायों को ही शामिल किया गया है। सरकार ने योजना के तहत 25 दुधारु गायों की एक इकाई स्थापित करने में 62, 50,000 रुपये के खर्च का आकलन किया है। ऐसे में, सरकार लाभार्थी को कुल व्यय पर 50 प्रतिशत अनुदान यानी अधिकतम 31,25,000 रुपये देगी। सरकार इस योजना का लाभ तीन चरणों में देगी। पहले चरण में इकाई के निर्माण पर परियोजना लागत का 25 प्रतिशत का अनुदान दिया जाएगा। वहीं दूसरे चरण में 25 दुधारु गायों की खरीद, उनके 3 साल का बीमा और यातायात पर परियोजना लागत का 12.5 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। जबकि तीसरे चरण में परियोजना लागत की 12.5 प्रतिशत राशि का अनुदान दिया जाएगा।

अधिक आवेदन आने पर ई–लॉटरी से होगा लाभार्थी का चयन

योजना का लाभ लेने के लिए लाभार्थी के पास कम से कम 3 सालों का गौपालन का अनुभव होना चाहिए। वहीं, गौवंशों की ईयर टैगिंग होना अनिवार्य है। इसके साथ ही इकाई की स्थापना के लिए 0.5 एकड़ भूमि होना आवश्यक है। साथ ही, लाभार्थी के पास लगभग 1.5 एकड़ भूमि हरित चारा के लिए होना चाहिये। यह जमीन उसकी खुद की (पैतृक) हो सकती है या फिर उसने उसे 7 सालों के लिए लीज पर लिया हो। इस योजना का लाभ पूर्व में संचालित कामधेनु, मिनी कामधेनु एवं माइक्रो कामधेनु योजना के लाभार्थी नहीं उठा सकेंगे। लाभार्थी का चयन ऑनलाइन और ऑफलाइन आवेदन के माध्यम से किया जाएगा। वहीं, आवेदन की संख्या अधिक होने पर मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता वाली समिति द्वारा ई–लॉटरी के जरिये चयन किया जाएगा। ■

(साभार : हिन्दुस्तान)

THE ONE THING THAT MAKES ALL OUR PRODUCTS DELIGHTFULLY DELICIOUS IS THE GOODNESS OF OUR MILK.

sweet rich creamy happiness.

happiness of juicy mangoes with mishti doi.

soft creamy delicious happiness.

For more information, call 1800-1801-018 or visit: www.motherdairy.com

MOTHER DAIRY®

cheesy
wholesome
tasty
happy.

rich
creamy.
happiness.

happy mix of
real fruits
with delicious
curd.

thick rich
fruity
happiness.

the happiest
mix of healthy
and tasty.

*Visual Depiction Only

पशुपालन

पशुपालकों के लिए
(सौजन्यः पशुचिकित्सा एवं पशु

नवंबर 2023

- परजीवीनाशक दवा घोल देने से पशुओं को परजीवी प्रकोप से बचाया जा सकता है, जिससे ना केवल पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि जो भोजन पशु खाता है उसका भी शरीर में सदुपयोग होगा। इससे उत्पादन बढ़ता है।

- चारे की सही समय पर खरीद–फरोख्त व संग्रहण पर पूरा ध्यान दें।
- बहुवर्षीय घासों की कटाई करें। इसके बाद ये सुषुप्तावस्था में चली जाती हैं, जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी–मार्च में ही प्राप्त होती है।

- इस माह में तापमान कम होने की स्थिति में पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करें, इसके लिए रात में पशुओं को खुले में ना बांधें।
- पशुओं का बिछावन सूखा रखें।
- थनैला रोग से बचाव के उपाय करें। पशुओं में विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण करायें।

- पशुओं को लवण–मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बांटे में मिलाकर दें।

कैलेंडर 2023

उपयोगी मासिक जानकारी
विज्ञान महाविद्यालय, जयपुर)

दिसंबर 2023

- पशुशाला के दरवाजे खिड़कियां व अन्य खुले स्थान पर रात के समय बोरी, त्रिपाल व टाट को टांगना चाहिए, जिससे पशुओं को सीधी ठंडी हवा से बचाया जा सके। यदि शीत लहर हो तो पशुओं को अलाव जलाकर भी सर्दी के प्रकोप से बचा जा सकता है।
- रात के समय पशुशाला के फर्श पर पराली या भूसा को बिछाएं जिससे फर्श से सीधी ठंड पशुओं को न लगे।
- पशुशाला का फर्श ढलान युक्त होना चाहिए, जिससे पशुओं का मूत्र बहकर कर निकल जाए ताकि बिछावन सूखा बना रहे।
- पशुओं को दिन के समय धूप में छोड़ें, इससे पशुशाला का फर्श अथवा जमीन सूख जाएगा तथा पशु को गर्माहट भी मिलेगी।
- पशु को ताजा वह स्वच्छ पानी ही पिलाएं, जो अधिक ठंडा ना हो।
- नवजात बच्चों व बीमार पशुओं को रात के समय किसी बोरी या तिरपाल से ढक दें तथा सुबह धूप निकलने पर हटा दें।
- पशुओं को हरे चारे, विशेषकर बरसीम या रिजका के साथ तूड़ी अथवा भूसा मिलाकर खिलाएं। इससे पशु स्वस्थ एवं निरोग बना रहेगा और दूध का उत्पादन भी कम नहीं होगा, क्योंकि केवल हरा चारा खिलाने से अफारा तथा अपच होने का भय बना रहता है। शीत ऋतु में पशुओं को राशन में बाजरा कम मात्रा में खिलाना चाहिए क्योंकि सर्दी की ऋतु में बाजरे का पाचन कम होता है। इसलिए बाजरा किसी भी संतुलित आहार में 20% से अधिक नहीं होना चाहिए। रात के समय में पशुओं को सूखा चारा आहार के रूप में उपलब्ध कराएं। सर्दी के मौसम में दुधारू पशुओं को बिनौला अधिक मात्रा में खिलाना चाहिए, जिससे दूध के अंदर वसा की मात्रा बढ़ सके। शीत ऋतु में पशुओं के रहने के स्थान पर सेंधा नमक का ढेला रखना चाहिए, ताकि पशु आवश्यकता के अनुसार उसे चाटता रहे।

सम्मान

गुजरात में गिर गाय की हाईटेक गोशाला को राष्ट्रीय पुरस्कार

साभार : गांव कनेक्शन

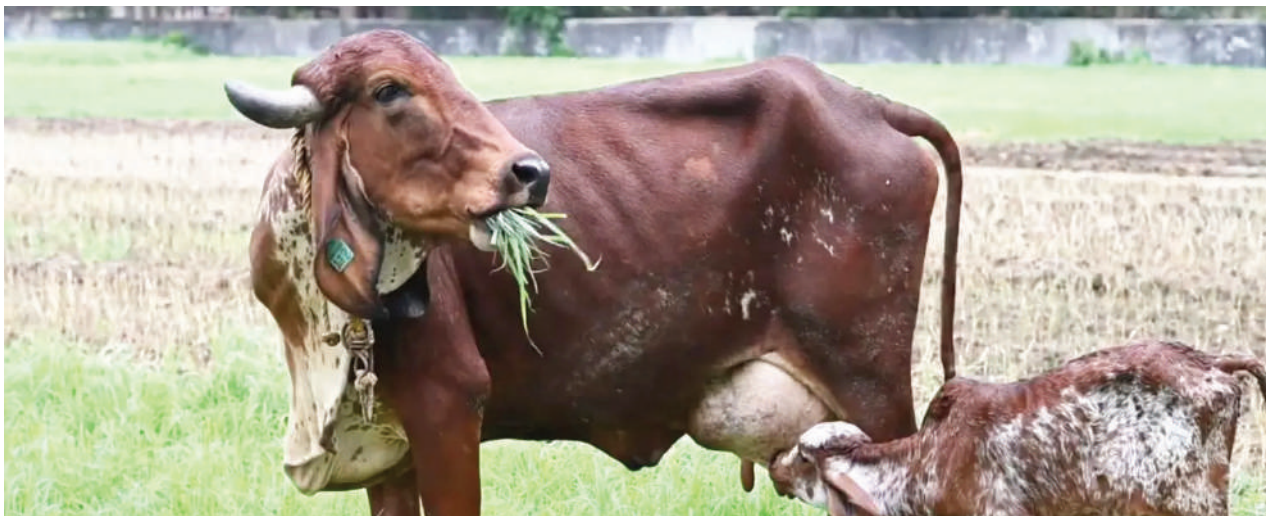

400 एकड़ फार्म में फैले गिर ऑर्गेनिक फार्म में गाय और भैंसों के लिए खुली जगह है, जहाँ पर ये टहलती हैं।

गोशाला का नाम सुनते ही अगर आप के भी दिमाग में किसी गोबर से पटी जगह का खयाल आता है तो आपको गिर गाय की इस हाई टेक गोशाला को जरूर देखना चाहिए।

गुजरात के सूरत जिला मुख्यालय से लगभग 31 किमी. दूर कामरेज ग्राम पँचायत के नवी पारडी गाँव में है गिर गाय की हाईटेक गोशाला गिर ऑर्गेनिक। इसकी शुरुआत की है मगन भाई अहीर और उनके भाइयों ने। यहाँ दूध निकालने से लेकर हर काम आधुनिक तकनीक की मदद से होता है।

गिर गाय के संरक्षण के लिए मगनभाई अहीर के बेटे नीलेश मगनभाई अहीर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

कृषि में ग्रेजुएशन के बाद नीलेश खेती और पशुपालन से जुड़ गए। नीलेश मगनभाई गाँव कनेक्शन से बताते हैं, ''ऐसा नहीं है कि हमने पहली बार पशुपालन की शुरुआत की, हम अहीर हैं तो हमारे यहाँ पशुपालन पुरखों के समय से होता आ रहा है।''

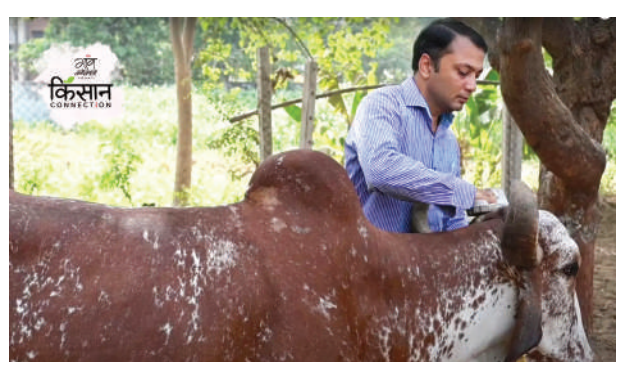

नीलेश मगनभाई अहीर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

वो आगे कहते हैं, ''लेकिन हमने इसे समय के साथ हाई टेक और प्रोफेशनली बढ़ाया है, आज हमारे पास 400 से अधिक गिर गाय और 100 से ज़यादा जाफराबादी भैंसें हैं।''

लगभग 400 एकड़ फार्म में फैले गिर ऑर्गेनिक फार्म में गाय और भैंसों के लिए खुली जगह है, जहाँ पर ये टहलती हैं। फार्म में ज्वार, बाजरा, मूँगफली की जैविक खेती भी होती है।

करीब 18 साल पहले इनके यहाँ 10–12 गाय और चार–पाँच भैंस थीं। नीलेश बताते हैं, ''हमारा सँयुक्त परिवार था तो जितना दूध होता वो घर भर के लिए हो जाता था,हमें शुरू से ही पशुपालन में आगे बढ़ना था, इसी को हमें अपना मेन बिजनेस करना था। हम ने सोचा कि सूरत ही नहीं पूरे देश में लोगों को शुद्ध दूध और घी मिले, इसलिए हम इसे आगे बढ़ाते गए, अभी हम इसे आगे और भी ज्यादा बढ़ाएँगे। '' नीलेश ने आगे कहा।

मगन भाई के पाँच भाई और सभी के दो–दो बच्चे हैं, सभी डेरी और खेती का काम देखते हैं। नीलेश कहते हैं, ''मेरे कजिन नीतिन ने डेरी साइंस की पढ़ाई की है, वो मैनेजमेंट देखता है, एक भाई मार्केटिंग देखता है और मैं और मेरे पापा पशुपालन और खेती देखते हैं।''

नीलेश के अनुसार पहले कहा जाता रहा है कि उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और कनिष्ठ नौकरी थी, लेकिन आज अगर हम खेती और पशुपालन में अच्छा काम करें तो हम व्यापार भी कर सकते हैं और सबको नौकरी पर भी रख सकते हैं।

आज गिर ऑर्गेनिक में हर दिन 900 लीटर दूध का उत्पादन हो जाता है, दूध के साथ घी भी बनाकर बेचते हैं। ''पशुपालन में 10–15 प्रतिशत का फायदा हो जाता है, दूसरा पशुपालन में जो पशु बढ़ते हैं वही हमारा सबसे बड़ा प्रॉफिट है, हर साल 20 प्रतिशत बढ़ जाते हैं, ''नीलेश आगे बताते हैं।

पशुपालन से कमाई के बारे में नीलेश कहते हैं, ''अगर आप पशुपालन कर रहे हैं और आपको बाहर से पैसे नहीं लगाने पड़ रहे हैं तो इससे बड़ा आपका प्रॉफिट है ही नहीं, अगर आपके पास खेती की जमीन नहीं है तो आप पशुपालन नहीं कर सकते हैं।''

गिर ऑर्गेनिक ने 80–90 लोगों को रोजगार दिया है, साथ ही गाँव के लोगों गोमूत्र और गोबर भी उपलब्ध कराते हैं, जिससे वो भी जैविक खेती कर सकें। ■

विज्ञापन के उत्तम साधन
आईडीए के लोकप्रिय प्रकाशन

संपर्क : ida.adv@gmail.com

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :

दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या ☐
(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य.....पिन कोड.....ई–मेल.....

फोन.....मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....

बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।

सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indiandairyassociation.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **CNRB0019009**
बैंक : केनरा बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

तकनीक

उन्नत स्वचालन, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी व इंस्ट्रूमेंटेशन द्वारा डेरी प्रसंस्करण

चित्रनायक', प्रशांत मिंज, खुशबू कुमारी, प्रियंका एवं हिमा जॉन

'प्रधान वैज्ञानिक, डेरी अभियांत्रिकी प्रभाग, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मानद विश्वविद्यालय), करनाल–132001

पिछले तीस वर्षों के दौरान औद्योगिक विकास मुख्यतः चार प्रकार के अंतर–संबंधित कारकों से प्रभावित रहा है, ये हैं: 1. डिजिटल प्रौद्योगिकी में प्रगति, 2. विज्ञान में प्रगति, 3. सामाजिक आवश्यकताओं और मांगों का विकास और 4. विशेष रूप से स्वचालन, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी व इंस्ट्रूमेंटेशन का विकास। डेरी प्लांट ऑपरेशन में डिजिटल प्रौद्योगिकी, उच्च सेंसिटिविटी वाले सेंसर, उन्नत उपकरण, सूचना प्रौद्योगिकी आदि का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है, जिसके फलस्वरूप डेरी उत्पादों की गुणवत्ता व उनकी शेल्फ लाइफ में बड़ी प्रगति हुई है। नई अवधारणाएँ, विशेष रूप से ज्ञान–आधारित माप और उन्नत नियंत्रण पद्धतियाँ आदि धीरे–धीरे लेकिन लगातार प्रक्रिया संचालन, ऑनलाइन और वास्तविक समय में प्रदर्शन हेतु डेरी प्लांट प्रसंस्करण के उपयोग में लाई जा रही हैं। दुग्ध व दुग्ध से बने उत्पादों की उच्च उत्पाद गुणवत्ता, निर्माण के दौरान बेहतर प्रक्रिया दक्षता और निरंतर उत्पादकता के लिए स्वच्छ और सुरक्षित संचालन के साथ–साथ प्रसंस्करण प्रक्रिया में स्वचालन मुख्य भूमिका निभा रहा है।

गाय, भैंस, ऊँट, बकरी आदि से प्राप्त दूध एक बहुत ही मूल्यवान, संपूर्ण व पौष्टिक आहार है, जिसकी शेल्फ लाइफ अत्यंत ही अल्प होती है और इसे सावधानीपूर्वक कम तापमान पर संभालने की आवश्यकता होती है। दूध को उपयोग करने योग्य व उत्तम गुणवत्ता के साथ कई दिनों तक संरक्षित करने हेतु इसे ठंडा करने जैसी तकनीकों तथा किण्वन तकनीक का उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि उच्च तापमान में कच्चे दूध की गुणवत्ता प्रभावित होने की सबसे अधिक संभावना होती है। देश के उन्नत डेरी प्लांटों में

ऊष्मीय ऊर्जा स्थानांतरण तकनीक द्वारा दुग्ध पाश्चराइजेशन की प्रक्रिया अत्यंत ही प्रचलित व उपयोगी है। यह प्रक्रिया दूध को उत्तम स्वाद व गुणवत्ता के साथ संरक्षित करने हेतु उपयुक्त बनाती है और संभावित रोगजनक सूक्ष्मजीवों की संख्या को उन स्तरों तक कम कर देती है, जहां वे एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य खतरे का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। दुग्ध के प्रचलित व उपयोगी उत्पाद यथा मक्खन, पनीर, दही, चीज, घी आदि में लंबे शेल्फ लाइफ के साथ–साथ इनके संवर्धित मूल्य और आसानी से परिवहनीय डेरी उत्पादों में बदलने के लिए दूध को संसाधित किया जाता है। उन्नत व विकसित स्वचालन तकनीक द्वारा दूध प्रसंस्करण के अनेक फायदे होते हैं। इससे डेरी उद्योग से जुड़े कृषकों को नियमित आय प्राप्त होती है, पोषण में सुधार होता है, साथ ही साथ प्रसंस्करित दूध उत्पादों को बेचना ताजा दूध बेचने की तुलना में आर्थिक रुप से अधिक लाभदायक है। विकसित डेरी प्लांटों में उच्च सेंसिटिविटी वाले सेंसर, उन्नत उपकरण व इंस्ट्रूमेंटेशन और कंट्रोल सिस्टम की पेशकश आज बहुत बड़ी है। औद्योगिक

उपयोगकर्ताओं के पास आजकल उपकरण निर्माताओं की इंटरनेट सूचना साइटों के माध्यम से सभी प्रकार के उपकरण और नियंत्रण प्रणालियों पर प्लांट ऑटोमेशन से संबंधित डेटा संचार सहित कॉन्फिगरेशन के साथ विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। प्रसंस्करण पद्धति की तकनीक में निरंतर सुधार व विकास से नए रोजगार की संभावनाएं उत्पन्न होती हैं एवं दुग्ध व अन्य खाद्य उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा में भी सुधार होता है। देश के डेरी उद्योग से जुड़े कृषकों हेतु इन तकनीकों को ग्रामीण स्तर तक पहुंचाने की आवश्यकता है, ताकि विकास सिर्फ बड़े शहरों व विकसित स्थानों तक ही सीमित ना रहे।

कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का उपयोग एवं दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता व मूल्यांकन

डेरी उत्पादों की उत्तम तकनीकों द्वारा गुणवत्ता मूल्यांकन कर उनके शेल्फ–लाइफ के दौरान उनमें होने वाले यांत्रिक, रासायनिक, सूक्ष्मजीवविज्ञानी परिवर्तनों की गहनता से जांच की जा सकती है। विभिन्न प्रकार के इंस्ट्रूमेंट द्वारा दुग्ध उत्पादों की जांच करके दोनों प्रकारों, यथा गुणात्मक और मात्रात्मक मूल्यांकन निर्धारण के द्वारा उनकी गुणवत्ता की जानकारी प्राप्त होती है। दुग्ध व दुग्ध के उत्पादों का उचित गुणवत्ता मूल्यांकन इसलिए भी अत्यावश्यक है, क्योंकि दुग्ध उत्पादन में भारत पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर कई वर्षों से विराजमान है और उत्तम तकनीकों की सहायता व डेरी कृषकों की सार्थक मेहनत से दुग्ध उत्पादन में ये वृद्धि लगातार जारी है। वर्तमान समय में कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक्स प्रौद्योगिकियों के विकास से नए व उत्तम प्रकार के इंस्ट्रूमेंट्स उपलब्ध हो रहे हैं, जिनके उपयोग द्वारा प्रसंस्करण प्रक्रिया के दौरान के डेटा संग्रह और सूचना विश्लेषण आदि कार्य आसान हो जाते हैं। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि एक बार खाद्य गुणवत्ता मूल्यांकन प्रणाली स्थापित और कार्यान्वित हो जाने के बाद प्रणाली एक नियत मानकों के साथ तुलना कर खाद्य गुणवत्ता के सूक्ष्म मान में भी हो रहे परिवर्तन या विचलन को सेंसर द्वारा अनुभव करेगी एवं स्वचालित कंट्रोलर द्वारा दिए गए कमांड से इसे नियंत्रित भी करेगी। इसके विपरीत मानवीय मूल्यांकन प्रक्रियाओं में एक्सपर्ट की मानसिक और शारीरिक समस्याओं का भी उनके द्वारा किये जा रहे मूल्यांकन व परिणाम पर प्रभाव पड़ता है। गुणवत्ता मूल्यांकन व स्वचालन कंट्रोल में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी सिस्टम का उपयोग करने का एक और बड़ा लाभ यह है कि प्रसंस्करण प्रक्रिया के दौरान बड़ी संख्या में प्राप्त डाटा व परिणामों को एकीकृत करना संभव होता है व खाद्य गुणवत्ता मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को स्वचालित भी किया जा सकता है।

दुग्ध प्रसंस्करण हेतु उन्नत पाश्चराइजेशन पद्धति

ऊष्मीय ऊर्जा स्थानांतरण तकनीक द्वारा दूध के पाश्चराइजेशन की प्रक्रिया फ्रांसीसी वैज्ञानिक लुई पाश्चर द्वारा सन 1860 के दौरान विकसित की गई थी। पाश्चराइजेशन उत्तम तकनीक वाली एक ऊष्मीय उपचार प्रक्रिया है जो दुग्ध, कुछ खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों में रोगजनक सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर देने की क्षमता के कारण पूरे विश्व में लोकप्रिय व प्रचलित है। इसका नाम फ्रांसीसी वैज्ञानिक लुई पाश्चर के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 1860 के दशक में दिखाया था कि कुछ मिनटों के लिए पेय पदार्थों को लगभग 57 डिग्री सेल्सियस (135 डिग्री फारेनहाइट) तक गर्म करके शराब और बियर के असामान्य किण्वन को रोका जा सकता है। गाय, भैंस, ऊंट व मिश्रित दूध को विभिन्न स्त्रोतों से एकत्र कर सर्वप्रथम बीएमसी (बल्क मिल्क कूलर) में रखा जाता है, जिसमें तापमान 4 डिग्री के लगभग नियत रखा जाता है ताकि माइक्रोबियल गुणन की गति न्यूनतम रहे। तत्पश्चात इसे डबल जैकेटेड टैंकर द्वारा मिल्क प्रसंस्करण प्लांट लाया जाता है। मिल्क प्रसंस्करण प्लांट में ऊष्मीय विधि द्वारा दूध के प्रसंस्करण में पाश्चराइजेशन पद्धति पहली प्रक्रिया है। पाश्चरीकरण एक हल्की ऊष्मीय उपचार प्रक्रिया है, जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के खाद्य उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला पर किया जाता है। इसे एक खास तापमान पर और नियत समय तक दूध को गर्म करने की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है, जिसके द्वारा उसमें उपस्थित किसी भी रोगजनकों को नष्ट करने की क्षमता होती है, जो दुग्ध व दुग्ध उत्पादों में मौजूद हो सकते हैं, और साथ ही उनके संरचना, स्वाद और पोषक मूल्य में न्यूनतम बदलाव लाते हैं। पाश्चराइजेशन के दो प्राथमिक उद्देश्य रोगजनक बैक्टीरिया को दूर करना व खाद्य पदार्थों की शेल्फ लाइफ में विस्तार करना है। पाश्चराइजेशन का मतलब है कि दूध व दूध

उत्पाद के प्रत्येक कण को एक विशिष्ट तापमान पर निर्दिष्ट अवधि, उदाहरणार्थ : निम्न तापमान अधिक समय पद्धति में दुग्ध उत्पादों को खराब हुए बिना लंबे समय तक संरक्षित व सुरक्षित रखा जा सकता है।

देश के विभिन्न अग्रणी राज्यों में कार्यरत मिल्क–कोऑपरेटिव व दुग्ध उत्पादन

राज्य	दुग्ध उत्पादन (मिलियन टन)
1. उत्तर प्रदेश (पराग डेरी)	30.51
2. राजस्थान (सरस)	23.66
3. मध्य प्रदेश (सांची)	15.91
4. आंध्र प्रदेश (विजया)	15.04
5. गुजरात (अमूल)	14.93
6. पंजाब (वेरका)	12.59
7. महाराष्ट्र (महानंद)	11.65
8. हरियाणा (वीटा)	10.72
9. बिहार (सुधा)	9.81
10. तमिलनाडु (आविन)	8.36
11. कर्नाटक (नंदिनी)	7.90
12. पश्चिम बंगाल (बेनमिल्क)	5.60
13. तेलंगाना (विजया)	5.41
14. केरल (मिल्मा)	2.548
15. जम्मू एंड कश्मीर (स्नो कैप)	2.54

63 डिग्री सेल्सियस पर 30 मिनट तक, अल्ट्रा हाई तापमान विधि में 135 से 140 डिग्री सेल्सियस पर 1 से 3 सेकड तक दुग्ध अथवा दुग्ध उत्पादों ऊष्मीय विधि द्वारा उपचारित करना होता है। इससे दुग्ध में उपस्थित मुख्यतः सभी प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया, रोगजन्य विषाणु और अन्य सूक्ष्मजीव नष्ट हो जाते हैं, जो उत्पादों के साथ साथ उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकते हैं। यह विकसित तकनीक दूध को सुरक्षित बनाती है और साथ ही साथ इसकी गुणवत्ता को भी बेहतर बनाती है एवं इस प्रकार उपचारित दूध और

अमूल, नंदिनी, वीटा, वेरका, सुधा, मदर डेरी आदि देश के विकसित डेरी कोऑपरेटिव प्लांटों में नियंत्रित तापमान, दवाब व अन्य सभी मानकों का पूरा–पूरा ध्यान रखा जाता है, समुचित रखरखाव की काफी उत्तम व्यवस्था होती है और दुग्ध, दुग्ध उत्पादों व विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों का उत्पादन अत्यंत उन्नत तकनीक से होता है। वैज्ञानिक शोधों के अनुसार यह पाया गया है कि चार डिग्री या चार डिग्री से कम तापमान पर दुग्ध, दुग्ध उत्पादों व विभिन्न प्रकार के

खाद्य पदार्थों में माइक्रोबियल गुणन की गति काफी धीमी या लगभग नगण्य रहती है, तत्पश्चात शोधों से यह भी सिद्ध हुआ है कि माइक्रोबियल गुणन की गति तापमान बढ़ने के साथ–साथ तेजी से बढ़ती जाती है। अतः शोधकर्ताओं के समक्ष दुग्ध, दुग्ध उत्पादों व विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों की उत्तम गुणवत्ता को संरक्षित रखने हेतु उन्हें उचित तापमान उपलब्ध कराना है, जिससे ये चार डिग्री या उससे कम तापमान पर लम्बे समय तक संरक्षित व सुरक्षित रखे जा सकें। शोध–पत्रों के अनुसार गाय के दूध में प्रति मिली लीटर माइक्रोबियल काउन्ट 105 से अधिक नहीं होना चाहिए, साथ ही साथ गाय, भैंस अथवा मिश्रित दूध में माइक्रोबियल काउन्ट का मान 105 प्रति मिली लीटर से कम होने पर ही इस दूध को उत्तम गुणवत्ता की श्रेणी में रखा जाता है व इसे अंतरराष्ट्रीय बाजार में स्वीकारा जाता है । तकनीक में लगातार सुधार होता जा रहा है व उत्पादन में वृद्धि होने के साथ–साथ इनको लम्बे समय तक संरक्षित रखने की दिशा में भी शोधकार्य तेजी से हो रहे हैं, जिसका परिणाम हमें बाजार में उपलब्ध उत्तम गुणवत्ता वाले विभिन्न उत्पादों में मिल रहा है। प्राचीन व सरल विधि में सामान्यतः किसान अपने दूध को सीधे उबाल कर आगे भेजते हैं। हालांकि, प्रत्यक्ष उबालना उचित नहीं है, क्योंकि यह बाहरी कणों या जीवाणुओं से संदूषण का कारण भी बन सकता है। प्रत्यक्ष उबालने की विधि अकुशल है, क्योंकि इस विधि में अधिक ऊर्जा (अधिक ईंधन या जलाऊ लकड़ी) की खपत होती है। अप्रत्यक्ष रूप से दूध को गर्म करना एक प्राचीन व बेहतर तरीका है। इस पद्धति में दूध को एक बड़े धातु के बर्तन में पानी के अंदर रख सकते हैं, ताकि पानी दूध के चारों ओर एक जैकेट बना सके। खुली आग या गैस स्टोव या बिजली के गर्म प्लेट का उपयोग करके बड़े बाहरी बर्तन को गर्म करें।

दुग्ध पाश्चराइजेशन की विधियां

बैच पाश्चराइजेशन–निम्न तापमान अधिक समय, कम से कम 30 मिनट के लिए 63 डिग्री सेल्सियस पर दूध को ऊष्मीय उपचार देना। यह विधि छोटे पैमाने पर दुग्ध उत्पादकों और उत्पादक सहकारी समितियों के लिए उपयुक्त है। बैच या लो–टेम्प्रेचर–लॉन्ग–टाइम या होल्डर पाश्चुरीकरण प्रक्रिया दूध को पाश्चुरीकृत करने की पारंपरिक विधि है। इस विधि में दुग्ध या दुग्ध उत्पाद को कम से कम 30 मिनट के लिए लगभग 63 डिग्री सेल्सियस तक गर्म कर ऊष्मीय उपचार करने की आवश्यकता होती है। बैच विधि में द्रव दूध को एक वैट पाश्चराइजर में रखा जाता है, जिसमें एक मिल्क वैट होता है जो पानी या भाप की ऊष्मीय ऊर्जा द्वारा उपचारित होता व तेजी से घूमता है। दूध को ठंडा करने के लिए दूध को मिल्क वैट में ठंडा होने दिया जाता है या दूध को मिल्क वैट से निकाल दिया जाता है। आइसक्रीम उद्योग इस प्रक्रिया का प्राथमिक उपयोगकर्ता है।

उच्च तापमान कम समय पाश्चराइजेशन–कम से कम 15 मिनट के लिए 72 डिग्री सेलसियस, यह दूध की अधिक मात्रा के लिए काफी उपयुक्त विधि है जैसे एक बार में 250 लीटर से अधिक। फ्लैश पाश्चराइजेशन को ''उच्च–तापमान अल्पकालिक'' प्रसंस्करण भी कहा जाता है। फल और सब्जी के रस, बीयर, कोषेर वाइन और दूध जैसे कुछ डेरी उत्पादों जैसे नाशपाती पेय का ऊष्मीय पाश्चुरीकरण एक अत्यंत उत्तम व प्रचलित विधि है। अन्य पाश्चराइजेशन प्रक्रियाओं की तुलना में यह उत्पादों के रंग और स्वाद को बेहतर बनाए रखता है, लेकिन कुछ चीजों में पाया गया कि यह प्रक्रिया अलग–अलग है। दूध के कंटेनरों को भरने से पहले हानिकारक सूक्ष्मजीवों को मारने के लिए एवं उत्पादों को सुरक्षित बनाने के लिए और अनपेक्षित खाद्य पदार्थों की तुलना में उनके शेल्फ जीवन का विस्तार करने के लिए फ्लैश पाश्चुरीकरण तकनीक का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए एक निर्माता अपने पाश्चुरीकृत दूध की शेल्फ लाइफ को 6 से 12 महीने देता है। पोस्ट–पाश्चराइजेशन संदूषण को रोकने के लिए इसे एसेप्टिक प्रसंस्करण तकनीक के साथ ही संयोजन में किया जाना चाहिए। कंटेनर भरने से पहले हानिकारक व रोग फैलाने वाले सूक्ष्मजीवों को मारने के लिए फ्लैश पास्चराइजेशन तकनीक का उपयोग बहुतायत में किया जाता है।

अल्ट्रा उच्च तापमान तापमान–135 डिग्री सेलसियस, जिसका उपयोग बड़े प्लांटों द्वारा किया जाता है तथा इसके लिए विशेष मशीनरी की आवश्यकता होती है। बिना प्रशीतन के भी यूएचटी दूध को 6 महीने तक संग्रहित किया जा सकता है। अल्ट्रा–हाई टेम्परेचर प्रोसेसिंग, अल्ट्रा–हीट ट्रीटमेंट या अल्ट्रा–पाश्चराइजेशन एक फूड प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी है, जिसमें लिक्विड फूड, मुख्य रूप से दूध को 135 डिग्री

सेलसियस से ऊपर 2 से 5 सेकंड के लिए गर्म करके स्टरलाइज किया जाता है। इतना उच्च तापमान दूध और दुग्ध उत्पादों में उपस्थित हरेक प्रकार के विषाणुओं, रोगजन्य कीटाणुओं व बीजाणुओं को मारने के लिए काफी होता है एवं इस विधि द्वारा उपचारित उत्पाद पूर्ण रूप से सुरक्षित होते हैं। दूध उत्पादन में यूएचटी का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है, लेकिन इस प्रक्रिया का उपयोग फलों के रस, क्रीम, सोया दूध, दही, शराब, सूप, शहद और स्टोव के लिए भी किया जा सकता है। यूएचटी दूध पहली बार 1960 के दशक में विकसित किया गया था और धीरे–धीरे इसकी उपलब्धता बढ़ती गयी।

दुग्ध पाश्चराइजेशन हेतु प्लांट में लगा प्रेशर मापने हेतु उपकरण व वाल्व

प्लेट हीट एक्सचेंजर (पीएचई)–यह एक प्रकार का हीट एक्सचेंजर है जो दो तरल पदार्थों के बीच गर्मी को स्थानांतरित करने के लिए धातु की ऐसी प्लेटों का उपयोग करता है, जिनकी तापीय चालकता काफी अधिक होती है, उदाहनार्थ स्टेनलेस स्टील आदि, जिसे चित्रों में दर्शाया गया है। पारंपरिक हीट एक्सचेंजर का बड़ा फायदा यह है कि तरल पदार्थ (दुग्ध आदि) धातु की ऐसी प्लेटों के बहुत बड़े सतह क्षेत्र के संपर्क में आते हैं, क्योंकि तरल पदार्थ प्लेटों में फैल जाते हैं, जिससे ऊष्मा स्थानांतरण काफी अच्छे से होता है। यह ऊष्मा के उत्तम व लगातार स्थानांतरण की सुविधा प्रदान करता है एवं साथ ही साथ गर्म स्टीम की ऊष्मीय ऊर्जा के स्थानांतरण की गति को बहुत बढ़ा देता है, जिससे दूध जल्द ही नियत तापमान तक गर्म हो जाता है। प्लेट हीट एक्सचेंजर्स अब लगभग हर डेरी प्लांट में दुग्ध के पाश्चुरीकरण हेतु उपयोग किये जा रहे हैं।

दुग्ध प्रसंस्करण हेतु कंट्रोल पैनल

हीट एक्सचेंजर के पीछे की अवधारणा ऐसी है, जिससे एक तरल पदार्थ की ऊष्मीय उर्जा को दूसरे तरल पदार्थ में धातु की प्लेटों के उपयोग द्वारा स्थानांतरित करके गर्म या ठंडा करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। ज्यादातर मामलों में एक्सचेंजर में एक कुंडलित पाइप होता है, जिसमें एक द्रव होता है जो दूसरे तरल पदार्थ वाले कक्ष से होकर गुजरता है। पाइप की दीवारें आमतौर पर उत्तम ऊर्जा स्थानान्तरण हेतु धातु या उच्च तापीय चालकता वाले किसी अन्य पदार्थ से बनी होती हैं, जबकि बड़े कक्ष का बाहरी आवरण प्लास्टिक से बना होता है या थर्मल इन्सुलेशन के साथ लेपित होता है, जिससे बाह्य वातावरण में ऊष्मीय ऊर्जा का नुकसान ना हो। प्लेट हीट एक्सचेंजर (पीएचई) का आविष्कार डॉ. रिचर्ड सेलिगमैन ने सन् 1923 में किया और द्रवों को अप्रत्यक्ष रूप से गर्म करने और ठंडा करने के तरीकों में क्रांति ला दी। आज भी कई डेरी प्लांट इस उत्तम तकनीक द्वारा दूध को गर्म करके उनमें उपस्थित सूक्ष्मजीव व रोगाणुओं को खत्म करके शुद्ध दुग्ध उपलब्ध करा रहे हैं। दूध के पाश्चुरीकरण हेतु इस उत्तम तकनीक में कई सुधार होते गए और अब ये तकनीक सबसे अधिक उपयोग में लाई जा रही है। दूध प्रसंस्करण से देश के डेरी कृषकों की आय में वृद्धि के साथ–साथ उत्तम गुणवत्ता के प्रसंस्करित दूध व दुग्ध उत्पाद भी उपलब्ध हो पाए हैं, जिससे निरंतर उनके लाभ में वृद्धि हुई है।

डेरी प्लांट में उत्तम रख–रखाव हेतु स्वचालन की आवश्यकता

दूध व दूध उत्पादों से सम्बंधित शोध पत्रों में यह यह पाया गया है कि विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, खासकर दुग्ध व दुग्ध के विभिन्न उत्पादों की गुणवत्ता बरकरार रखने हेतु उनमें होने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाएं, उनके

माइक्रोबियल काउन्ट–मान तथा उनके रख–रखाव व सफाई आदि पर काफी ध्यान रखना पड़ता है। खाद्य पदार्थों को खुले में रखने व बार–बार छूने से उनमें रासायनिक प्रतिक्रिया की दर व माइक्रोबियल संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। अतः बाह्य संक्रमण व बार–बार छूने की प्रक्रिया को नियंत्रित करने एवं डेरी प्लांट में उत्तम रख–रखाव के लिए स्वचालन (ऑटोमेशन) तकनीक अपनाई जाती है। ऑटोमेशन तकनीक में मानवीय दखल कम हो जाता है व मशीन निर्धारित ढंग से सुरक्षित वातावरण में बिना किसी बाह्य वातावरण के हस्तक्षेप के अपना कार्य सम्पादित करती है। मानवीय भागीदारी व बाह्य वातावरण के हस्तक्षेप व दखल में कमी आने से मानवीय भूलों व गलतियों में तो कमी आती ही है, साथ ही साथ खाद्य पदार्थों में माइक्रोबियल संक्रमण की संभावनाओं में भी कमी आती है। इसके फलस्वरूप खाद्य पदार्थों की शेल्फ लाइफ में वृद्धि होती है व इन्हें अधिक समय तक उत्तम गुणवत्ता के साथ संरक्षित व सुरक्षित रखा जा सकता है।

डेरी प्लांट डिजाइन करते समय कई पहलुओं, यथा दुग्ध उत्पादों को अधिक समय तक उत्तम गुणवत्ता के साथ संरक्षित व सुरक्षित रखने पर विचार किया जाना चाहिए। डेरी प्लांट में उत्तम रख–रखाव हेतु एक संयंत्र का अंतिम उत्पादन समाधान हमेशा उत्पाद से संबंधित, प्रक्रिया से संबंधित और आर्थिक पहलुओं के बीच एक समझौता होता है, जिसमें संयंत्र की बाहरी मांगों को पूरा किया जाना चाहिए। ये बाहरी आवश्यकताएं उपलब्ध उत्पाद की मात्रा और प्रकार, उत्पाद की गुणवत्ता, स्वच्छता, उत्पादन उपलब्धता, लचीलापन, श्रम और अर्थव्यवस्था जैसे कारकों से संबंधित हैं। डेरी प्लांट में उत्तम व नियमित रख–रखाव हेतु उत्पाद से संबंधित पहलुओं में कच्चा माल, उत्पाद उपचार और अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता शामिल है, जबकि प्रक्रिया संबंधी पहलुओं में बाहरी मांगों को पूरा करने के लिए प्रक्रिया उपकरण का चयन शामिल हैं। देश के विकसित डेरी कोऑपरेटिव प्लांटों में नियंत्रित तापमान, दवाब व अन्य सभी मानकों के साथ ही साथ रख–रखाव का भी पूरा–पूरा ध्यान रखते हुए दुग्ध व दुग्ध के विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे, खोया, दही, मक्खन, पनीर, चीज, घी जैसे उत्पादों में लंबे शेल्फ लाइफ के साथ–साथ संवर्धित मूल्य, केंद्रित और आसानी से परिवहनीय डेरी उत्पादों में बदलने के लिए दूध को आगे संसाधित किया जा सकता है एवं देश के कोने–कोने तक हर घर में पहुंचाया जाता है। ■

नवीन

जैविक दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों के लाभ

वंदिता मिश्रा[1] एंव रोहित कुमार जायसवाल[2]

1 पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, यूपी

2 पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, बिहार

जैविक दुग्ध से तात्पर्य जैविक खेती के तरीकों के अनुसार पाले गए पशुधन से प्राप्त दूध और उससे बने उत्पादकों से है। अधिकांश भौगोलिक क्षेत्रों में, किसी भी उत्पाद पर "ऑर्गेनिक" या "बायो" या "इको" जैसे समकक्ष शब्द का उपयोग खाद्य अधिकारियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। दूध और पनीर जैसे जैविक पशु उत्पाद उन पशुओं से आते हैं, जिन्हें अधिक मानवीय परिस्थितियों में पाला जाता है, और इनके आहार में सिंथेटिक योजक शामिल नहीं होते हैं। जब हम खाद्य लेबल पर जैविक देखते हैं, तो हम आश्वस्त महसूस कर सकते हैं कि हमें स्वच्छ, ताजी सामग्री मिल रही है। मूल रूप से, जैविक मानक खरपतवारों और कीटों को रोकने के लिए समय–समय पर, प्राकृतिक खेती के तरीकों पर भरोसा कर, सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग पर रोक लगाते हैं। इसका परिणाम पाली गई गायों और लोगों के लिए भी एक स्वच्छ वातावरण है।

जब हम जैविक दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद खरीदते हैं, तो हम एक कृषि दृष्टिकोण का समर्थन कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य पर्यावरण की दृष्टि से धारणीय होना, पशु कल्याण को बढ़ावा देना और खाद्य उत्पादन में सिंथेटिक रसायनों के उपयोग को कम करना है। संयुक्त राज्य अमेरिका में यूएसडीए ऑर्गेनिक सील जैसे प्रमाणन लेबल उपभोक्ताओं को उन उत्पादों की पहचान करने में मदद करते हैं, जो विशिष्ट जैविक मानकों को पूरा करते हैं। जैविक दूध उत्पाद खरीदते समय हमेशा इन लेबलों को देखें।

सामान्य जैविक दुग्ध उत्पाद

1. **जैविक दुग्धः** यह उन गायों द्वारा उत्पादित दुग्ध है, जिन्हें जैविक खेती पद्धतियों में पाला जाता है। गायों को जैविक चारा दिया जाता है, और उन्हें चारागाह तक पहुंच मिलती है। इस प्रकार प्राप्त दुग्ध भी सिंथेटिक हार्मोन, एंटीबायोटिक्स और कीटनाशकों से मुक्त होता है।
2. **ऑर्गेनिक पनीरः** ऑर्गेनिक दूध से बना ऑर्गेनिक पनीर किसी भी रसायन, कृत्रिम हार्मोन या एंटीबायोटिक्स से मुक्त होता है। इसका उत्पादन सिंथेटिक रसायनों या आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों के उपयोग के बिना किया जाता है।
3. **जैविक दहीः** जैविक दूध की तरह, जैविक दही जैविक खेतों में पाली गई गायों द्वारा उत्पादित दूध से बनाया जाता है। इसमें सिंथेटिक योजक नहीं होते हैं, और कुछ किस्मों में जैविक फल शामिल हो सकते हैं।

4. **जैविक मक्खनः** जैविक मक्खन जैविक दूध की मलाई से बनाया जाता है। इसका उत्पादन सिंथेटिक कीटनाशकों या एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग के बिना किया जाता है।
5. **ऑर्गेनिक आइसक्रीमः** ऑर्गेनिक आइसक्रीम ऑर्गेनिक दूध और क्रीम से बनाई जाती है, और यह सिंथेटिक योजक से मुक्त होती है। कुछ किस्मों में जैविक स्वाद भी शामिल हो सकते हैं।
6. **जैविक घीः** जैविक घी पारंपरिक बिलोना विधि का उपयोग करके जैविक दूध की मलाई से तैयार किया जाता

है। मक्खन बनाने के लिए धीरे–धीरे मथने से पहले निकाली गई क्रीम को प्रसंस्करित किया जाता है। फिर मक्खन को धीमी आंच पर तब तक गर्म किया जाता है, जब तक कि पानी वाष्पित न हो जाए, जिससे सुगंध और उत्तम दानेदार बनावट वाला शुद्ध, मिलावट रहित घी बन जाता है। जैविक दूध से निर्मित क्रीम में कोई एंटीबायोटिक, प्रेरित हार्मोन या रासायनिक अवशेष नहीं होते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि प्राप्त घी शुद्ध और मिलावट रहित है। ऑर्गेनिक घी में कोई संरक्षक, इमल्सीफायर या सिंथेटिक योजक नहीं होते हैं।

जैविक दुग्ध उत्पादों के लिए विनियम

भारत में जैविक दुग्ध उत्पादों के लिए विशिष्ट नियम, जिनमें भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) द्वारा निर्धारित नियम भी शामिल हैं, जैविक खाद्य नियमों की व्यापक श्रेणी में आते हैं। यहां कुछ सामान्य पहलू दिए गए हैं, जो आमतौर पर जैविक खाद्य उत्पादों से संबंधित नियमों में शामिल हैं:

1. **जैविक प्रमाणीकरण:** जैविक दुग्ध उत्पादों का उत्पादन जैविक खेती के सिद्धांतों के अनुसार किया जाना चाहिए। किसानों और प्रसंस्करणकर्ताओं को आमतौर पर मान्यता प्राप्त प्रमाणन निकायों से जैविक प्रमाणीकरण प्राप्त करना आवश्यक होता है।
2. **खेती के तरीके:** विनियम खेती के तरीकों में जैविक और प्राकृतिक आदानों के उपयोग को निर्दिष्ट कर सकते हैं। इसमें डेरी पशुओं के लिए जैविक चारा पर दिशानिर्देश, सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग पर प्रतिबंध और मिट्टी की उर्वरता के रखरखाव के लिए आवश्यकताएं शामिल हैं।
3. **प्रसंस्करण और हैंडलिंग:** जैविक दुग्ध उत्पादों के प्रसंस्करण और हैंडलिंग के संबंध में अक्सर नियम होते हैं। इसमें जैविक अवयवों के उपयोग, गैर–कार्बनिक पदार्थों के साथ संदूषण से बचने और उत्पादन श्रृंखला में जैविक उत्पादों की अखंडता को बनाए रखने पर दिशानिर्देश शामिल हैं।
4. **लेबलिंग:** स्पष्ट और सटीक लेबलिंग जैविक नियमों का एक प्रमुख पहलू है। जैविक के रूप में लेबल किए गए उत्पादों को विशिष्ट मानदंडों को पूरा करना होगा, और लेबल में जैविक प्रमाणन निकाय, जैविक लोगो यानी प्रतीक चिन्ह और अन्य प्रासंगिक विवरण के बारे में जानकारी शामिल हो सकती है।
5. **दस्तावेजीकरण और रिकॉर्ड कीपिंग:** उत्पादकों और प्रोसेसरों को अपनी जैविक खेती और प्रसंस्करण गतिविधियों का विस्तृत रिकॉर्ड बनाए रखने की आवश्यकता हो सकती है। प्रमाणन प्रक्रिया के दौरान यह दस्तावेज अक्सर जांच के अधीन होता है।

भारत में जैविक दूध उत्पाद बनाने वाले ब्रांड

भारत में ऐसे कई ब्रांड हैं, जो जैविक दुग्ध और दुग्ध उत्पादों की मार्केटिंग करते हैं। हालाँकि, ब्रांड और विशिष्ट उत्पादों की उपलब्धता समय और क्षेत्र के अनुसार भिन्न हो सकती है। भारत में कुछ प्रमुख जैविक दूध और डेरी उत्पाद ब्रांड इस प्रकार हैं:

1. **ऑर्गेनिक इंडिया:** हर्बल सप्लीमेंट और चाय सहित कई जैविक उत्पादों के लिए जाना जाने वाला ऑर्गेनिक इंडिया जैविक गाय का दूध भी प्रदान करता है।
2. **अमूल ऑर्गेनिक्स:** भारत की सबसे बड़ी डेरी सहकारी समितियों में से एक अमूल ने "अमूल ऑर्गेनिक्स" ब्रांड नाम के तहत जैविक दुग्ध और दुग्ध उत्पाद पेश किए हैं।
3. **मदर डेरी ऑर्गेनिक:** भारतीय डेरी उद्योग में एक अन्य महत्वपूर्ण ब्रांड मदर डेरी, 'मदर डेरी ऑर्गेनिक' ब्रांड के तहत जैविक दूध पेश करती है।
4. **ऑरोरा ऑर्गेनिक डेरी:** यह ब्रांड भारत के विभिन्न हिस्सों में घी सहित जैविक दुग्ध और दुग्ध उत्पाद के लिए जाना जाता है।
5. **अक्षयकल्प फार्म और फूड्स:** अक्षयकल्प भारत का पहला प्रमाणित जैविक डेरी उद्यम है और खेत तथा संयंत्र स्तर पर एंटीबायोटिक दवाओं के लिए दूध का परीक्षण करने वाला देश का पहला उद्यम भी है। यह जैविक और धारणीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देता है और जैविक दुग्ध और दुग्ध उत्पाद का उत्पादन करता है।
6. **टाटा एग्रिको:** टाटा केमिकल्स की सहायक कंपनी टाटा एग्रिको ने जैविक दूध और डेरी उत्पादों की पेशकश करते हुए जैविक डेरी क्षेत्र में कदम रखा है।

7. **वैदिक विलेजः** वैदिक विलेज अपने जैविक और ए2 दुग्ध उत्पादों के लिए जाना जाता है, जो पारंपरिक और धारणीय प्रथाओं का उपयोग करके उत्पादित किए जाते हैं।

जैविक दुग्ध उत्पादन में चुनौतियाँ एवं लाभ

जैविक दुग्ध उत्पादन चुनौतियों और लाभ दोनों के साथ आता है। यहां जैविक दुग्ध उत्पादन से जुड़ी कुछ समस्याओं और लाभों का अवलोकन दिया गया है।

जैविक दुग्ध उत्पादन के लाभ

1. **पर्यावरणीय स्थिरताः** जैविक खेती पद्धतियाँ पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन की गई हैं। इनमें अक्सर फसल चक्र, कवर फसल, और सिंथेटिक इनपुट पर निर्भरता कम करना शामिल होता है, जो मिट्टी के स्वास्थ्य और जैव विविधता में योगदान देता है।

2. **पशु कल्याणः** जैविक मानकों में आमतौर पर जानवरों के मानवीय उपचार के लिए दिशानिर्देश शामिल होते हैं। जैविक डेरी गायों को आमतौर पर चारागाह तक पहुंच की आवश्यकता होती है, और हार्मोन और एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग प्रतिबंधित है।

3. **कम रासायनिक अवशेषः** जैविक दुग्ध सिंथेटिक कीटनाशकों, जड़ी–बूटियों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों के उपयोग के बिना उत्पादित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप अंतिम उत्पाद में अल्प और स्वीकार्य सीमा में रासायनिक अवशेष मौजूद होते हैं।

4. **स्वास्थ्य लाभः** कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि जैविक दुग्ध में ओमेगा–3 फैटी एसिड और एंटीऑक्सिडेंट सहित कुछ पोषक तत्वों का उच्च स्तर हो सकता है। इसके अतिरिक्त, सिंथेटिक योजक की अनुपस्थिति अपने आहार के बारे में चिंतित उपभोक्ताओं को आकर्षित कर सकती है।

5. **सतत कृषि के लिए समर्थनः** जैविक खेती धारणीय प्रथाओं पर जोर देती है, जो मिट्टी के स्वास्थ्य और दीर्घकालिक कृषि व्यवहार्यता को बढ़ावा देती है। यह दृष्टिकोण कृषि प्रणालियों के समग्र लचीलेपन में योगदान दे सकता है।

6. **बाजार की मांगः** जैसे–जैसे उपभोक्ताओं में स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ रही है, जैविक दुग्ध सहित जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। यह मांग जैविक डेरी किसानों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान कर सकती है।

जैविक दुग्ध उत्पादन में चुनौतियाँ

1. **कम पैदावारः** जैविक खेती पद्धतियों के परिणामस्वरूप अक्सर पारंपरिक तरीकों की तुलना में कम पैदावार होती है। सिंथेटिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग पर प्रतिबंध इसके कारक हैं, जो फसल और चारा उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं।

2. **परिवर्तनकालिक अवधिः** एक पारंपरिक खेत को जैविक प्रथाओं में परिवर्तित करने में एक परिवर्तनकालिक अवधि शामिल होती है, जिसके दौरान भूमि को जैविक रूप से प्रबंधित किया जाना चाहिए लेकिन अभी तक यह जैविक प्रमाणीकरण के लिए योग्य नहीं है। यह परिवर्तनकाल किसानों के लिए कम पैदावार और आर्थिक चुनौतियाँ पैदा कर सकता है।

3. **प्रमाणन लागतः** किसानों के लिए जैविक प्रमाणीकरण प्राप्त करना और उसका रखरखाव करना महंगा हो सकता है। प्रमाणन में सख्त मानकों, दस्तावेजीकरण और नियमित निरीक्षण का अनुपालन शामिल है, ये सभी परिचालन लागत में वृद्धि करते हैं।

4. **सीमित कीट नियंत्रण विकल्प:** जैविक किसानों के पास कीट और रोग नियंत्रण के लिए कम विकल्प हैं, क्योंकि सिंथेटिक कीटनाशकों की अनुमति नहीं है। इससे कीटों और बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ सकती है, जिससे फसल और पशुधन दोनों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।
5. **बाजार की चुनौतियाँ:** अब जबकि जैविक उत्पादों की माँग बढ़ रही है, जैविक दुग्ध का बाजार प्रतिस्पर्धी हो सकता है। कुछ क्षेत्रों में मांग सीमित हो सकती है, जिससे जैविक डेरी खेती की आर्थिक व्यवहार्यता प्रभावित हो सकती है।

जैविक दुग्ध उत्पादों की स्वीकार्यता को प्रभावित करने वाले कारक

भारत में जैविक दुग्ध और दुग्ध उत्पादों की स्वीकार्यता लगातार बढ़ रही है, लेकिन यह विभिन्न क्षेत्रों और जनसांख्यिकीय समूहों में भिन्न हो सकती है। भारतीय उपभोक्ताओं के बीच जैविक डेरी उत्पादों की बढ़ती स्वीकार्यता में कई कारक योगदान करते हैं।

1. **स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता:** भारत में उपभोक्ताओं की बढ़ती संख्या स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो रही है और ऐसे उत्पादों की तलाश कर रही है, जिन्हें स्वास्थ्यवर्धक और अधिक प्राकृतिक माना जाता है।
2. **रासायनिक अवशेषों के बारे में चिंताएँ:** उपभोक्ता रासायनिक अवशेषों वाले खाद्य उत्पादों की खपत से जुड़े संभावित स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में जागरूक हो रहे हैं। सिंथेटिक रसायनों के उपयोग के बिना उत्पादित जैविक दुग्ध को एक सुरक्षित विकल्प के रूप में देखा जाता है।
3. **पर्यावरण के प्रति जागरूकता:** पर्यावरणीय स्थिरता और पर्यावरण पर कृषि के प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ी है। पर्यावरण के प्रति जागरूक उपभोक्ता जैविक दुग्ध उत्पादों का चयन कर सकते हैं क्योंकि जैविक खेती के तरीकों को आमतौर पर पर्यावरण के अधिक अनुकूल माना जाता है।
4. **पशु कल्याण:** पशु कल्याण और डेरी गायों के उपचार के बारे में चिंताओं ने उपभोक्ता विकल्पों को प्रभावित किया है। जैविक खेती के मानकों में अक्सर जानवरों के साथ मानवीय व्यवहार के लिए दिशानिर्देश शामिल होते हैं, जिसमें चरने के लिए चारागाह तक पहुंच प्रदान करना भी शामिल है।
5. **प्रीमियम गुणवत्ता की धारणा:** जैविक दुग्ध को अक्सर इसकी उत्पादन विधियों के कारण प्रीमियम गुणवत्ता के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें जैविक खेती के तरीके, प्रमाणन मानकों का पालन और कुछ सिंथेटिक योजकों की अनुपस्थिति शामिल है।
6. **सरकारी पहल और प्रमाणन:** भारत सरकार, भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण जैसी एजेंसियों के माध्यम से जैविक उत्पादों के लिए मानक स्थापित करने और लागू करने के लिए काम कर रही है। प्रमाणन लेबल, जैसे इंडिया ऑर्गेनिक लोगो, उपभोक्ताओं को प्रामाणिक जैविक उत्पादों की पहचान करने में मदद करते हैं।
7. **बढ़ती प्रयोज्य आय:** जैसे–जैसे प्रयोज्य आय बढ़ती है, कुछ उपभोक्ता स्वास्थ्यप्रद और अधिक धारणीय माने जाने वाले उत्पादों के लिए प्रीमियम का भुगतान करने को तैयार होते हैं। जैविक दुग्ध उत्पाद, अपेक्षाकृत अधिक महंगे होने के बावजूद, आबादी के एक वर्ग के बीच स्वीकार्यता प्राप्त कर रहे हैं।
8. **शैक्षिक पहल:** सरकारी एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों और जैविक खेती के पक्षधर समूहों द्वारा उपभोक्ताओं को जैविक खेती के लाभों और उनके भोजन विकल्पों के प्रभाव के बारे में शिक्षित करने के प्रयासों ने जागरूकता और स्वीकृति बढ़ाने में योगदान दिया है।

निष्कर्ष

आजकल उपभोक्ता भोजन की गुणवत्ता और सुरक्षा के प्रति अधिक चौकस हैं, और वे जानते हैं कि जैविक भोजन एंटीबायोटिक दवाओं और हार्मोन के उपयोग को प्रतिबंधित करते हुए इन जरूरतों को पूरा कर सकता है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि चुनौतियाँ मौजूद हैं, जिनमें जैविक उत्पादों की उच्च लागत, सीमित उपलब्धता और अधिक व्यापक जागरूकता की आवश्यकता शामिल है। इसके अतिरिक्त, समय के साथ उपभोक्ता दृष्टिकोण विकसित हो सकता है, और भारत में जैविक उत्पादों के परिदृश्य में और बदलाव देखने को मिल सकते हैं। वर्तमान स्वीकृति स्तर का आकलन करने के लिए हमें भारत में जैविक डेरी क्षेत्र के लिए विशेष रूप से हाल के बाजार अध्ययन, सर्वेक्षण या उपभोक्ता व्यवहार विश्लेषण की आवश्यकता है। ■

कहानी

यही मेरा वतन

– मुंशी प्रेमचंद

आज मेरे लिए बड़ी खुशी का दिन है, पूरे साठ बरस के बाद मुझे अपने प्यारे वतन का दर्शन फिर नसीब हुआ। जिस वक़्त मैं अपने प्यारे देश से विदा हुआ था और किस्मत मुझे पच्छिम की तरफ ले चली, मेरी उठती जवानी थी। मेरी रगों में ताजा खून दौड़ता था और सीना उमंगों और बड़े–बड़े इरादों से भरा हुआ था।

मुझे प्यारे हिन्दुस्तान से किसी जालिम की सख्तियों और इंसाफ के जबर्दस्त हाथों ने अलग नहीं किया था। नहीं, जालिम का जुल्म और कानून की सख्तियां मुझसे जो चाहें करा सकती हैं मगर मेरा वतन मुझसे नहीं छुड़ा सकतीं। यह मेरे बुलंद इरादे और बड़े–बड़े मंसूबे थे जिन्होंने मुझे देश निकाला दिया।

मैने अमरीका में खूब व्यापार किया, खूब दौलत कमायी और ऐश भी खूब किये। भाग्य से बीवी भी ऐसी मिली जो बहुत ही सुंदर थी, जिसकी खूबसूरती की चर्चा सारे अमरीका में फैली थी और जिसके दिल में मेरे अलावा कोई और नही था।

मैं अपनी बीवी को दिलोजान से प्यार करता था और वह मेरे लिए सब कुछ थी। मेरे पाँच बेटे हुए, सुन्दर, हृष्ट–पुष्ट और नेक, जिन्होंने व्यापार को और भी चमकाया और जिनके भोले, नन्हें बच्चे उस वक़्त मेरी गोद में बैठे हुए थे जब मैंने प्यारी मातृभूमि का अन्तिम दर्शन करने के लिए कदम उठाया।

मैने बेशुमार दौलत, वफादार बीवी, सपूत बेटे और प्यारे –प्यारे जिगर के टुकड़े, ऐसी–ऐसी अनमोल नेमतें छोड़ दीं। इसलिए कि प्यारी भारत माता का अन्तिम दर्शन कर लूँ। मैं बहुत बुड्ढा हो गया था। दस और हों तो पूरे सौ बरस का हो जाऊँ, और अब अगर मेरे दिल में कोई आरजू बाक़ी है तो यही कि अपने देश की ख़ाक में मिल जाऊँ।

यह आरजू कुछ आज ही मेरे मन में पैदा नहीं हुई है, उस वक़्त भी थी जब कि मेरी बीवी अपनी मीठी बातों और नाजुक अदाओं से मेरा दिल खुश किया करती थी। जबकि मेरे नौजवान बेटे सबेरे आकर अपने बूढ़े बाप को अदब से सलाम करते थे, उस वक़्त भी मेरे जिगर में एक काँटा–सा खटकता था और वह काँटा यह था कि मैं यहाँ अपने देश से निर्वासित हूँ।

यह देश मेरा नहीं है, मैं इस देश का नहीं हूँ। धन मेरा था, बीवी मेरी थी, लड़के मेरे थे और जायदादें मेरी थीं, मगर जाने क्यों मुझे रह रहकर अपनी मातृभूमि के टूटे–फूटे झोपड़े, चार छः बीघा मौरूसी जमीन और बचपन के लंगोटिया यारों की याद सताया करती थी और अक्सर खुशियों की धूमधाम में भी यह ख़याल चुटकी लिया करता कि काश अपने देश में होता!

मगर जिस वक़्त बम्बई में जहाज से उतरा और काले कोट–पतलून पहने, टूटी–फूटी अंग्रेजी बोलते मल्लाह देखे, फिर अंग्रेजी दुकानें, और मोटर–गाड़ियाँ नजर आयीं, फिर रबड़वाले पहियों और मुँह मे चुरुट दाबे आदमियों से मुठभेड़ हुई, फिर रेल का स्टेशन, और रेल पर सवार होकर अपने गाँव को चला, प्यारे गाँव को जो हरी–भरी पहाड़ियों के बीच में आबाद था, तो मेरी आँखों में आँसू भर आये।

मैं खूब रोया, क्योकि यह मेरा प्यारा देश नही था, यह वह देश न था जिसके दर्शन की लालसा हमेशा मेरे दिल में लहरें लिया करती थीं। यह कोई और देश था। यह अमरीका था, मगर प्यारा भारत नहीं।

रेलगाड़ी जंगलों, पहाड़ों, नदियों और मैदानों को पार करके मेरे प्यारे गाँव के पास पहुँची जो किसी जमाने में फूल पत्तों की बहुतायत और नदी–नालों की प्रचुरता में स्वर्ग से होड़ करता था। मैं गाड़ी से उतरा तो मेरा दिल बाँसों उछल रहा था–अब अपना प्यारा घर देखूँगा, अपने बचपन के प्यारे साथियो से मिलूँगा। मुझे उस वक़्त यह बिल्कुल याद न रहा कि मैं नब्बे बरस का बूढ़ा आदमी हूँ।

ज्यों–ज्यों मैं गाँव के पास पहुँचता था, मेरे क़दम जल्द–जल्द उठते थे और दिल में एक ऐसी खुशी लहर मार रही थी, जिसे बयान नहीं किया जा सकता। हर चीज पर आँखें फाड़–फाड़कर निगाह डालता–अहा, यह वो नाला हैं जिसमें हम रोज घोड़े नहलाते और खुद गोते लगाते थे, मगर अब इसके दोनों तरफ काँटेदार तारों की चहारदीवारी खिंची हुई थी और सामने एक बंगला था, जिसमें दो–तीन अंग्रेज बन्दूकें लिए इधर–उधर ताक रहे थे।

जैसे ही गाँव में गया तो आँखें बचपन के साथियों को ढूँढने लगीं, मगर अफसोस वह सब के सब मौत का निवाला बन चुके थे और मेरा टूटा–फूटा झोपड़ा जिसकी गोद में बरसों तक खेला था, जहां बचपन और बेफिक्रियों के मजे लूटे थे, जिसका नक्शा अभी तक आँखों में फिर रहा है, वह अब एक मिट्टी का ढेर बन गया था। जगह गैर–आबाद न थी। सैकड़ों आदमी चलते–फिरते नजर आये, जो अदालत और कलक्टरी और थाने पुलिस की बातें कर रहे थे। उनके चेहरे बेजान और फिक्र में डूबे हुए थे और वह सब दुनिया की परेशानियों से टूटे हुए मालूम होते थे। मेरे साथियों के से हृष्ट–पुष्ट, सुन्दर, गोरे–चिट्टे नौजवान कहीं न दिखाई दिये।

वह अखाड़ा जिसकी मेरे हाथों ने बुनियाद डाली थी, वहाँ अब एक टूटा–फूटा स्कूल था और उसमें गिनती के बीमार शक्ल–सूरत के बच्चे, जिनके चेहरों पर भूख लिखी थी, चिथड़े लगाये बैठे ऊँघ रहे थे। नहीं, यह मेरा देश नहीं है। यह देश देखने के लिए मैं इतनी दूर से नहीं आया। यह कोई और देश है, मेरा प्यारा देश नहीं है।

उस बरगद के पेड़ की तरफ दौड़ा जिसकी सुहानी छाया में हमने बचपन के मजे लूटे थे, जो हमारे बचपन का हिण्डोला और जवानी की आरामगाह था। इस प्यारे बरगद को देखते ही रोना–सा आने लगा और ऐसी हसरतभरी, तड़पाने वाली और दर्दनाक यादें ताजी हो गयीं कि घण्टों जमीन पर बैठकर रोता रहा। यही प्यारा बरगद है, जिसकी फुनगियों पर हम चढ़ जाते थे, जिसकी जटाएँ हमारा झूला थीं और जिसके फल हमें सारी दुनिया की मिठाइयों से ज्यादा मजेदार और मीठे मालूम होते थे।

वह मेरे गले में बाँहें डालकर खेलने वाले हमजोली, जो कभी रूठते थे, कभी मनाते थे, वह कहाँ गये? आह, मैं बेघरबार मुसाफिर क्या अब अकेला हूँ? क्या मेरा कोई साथी नहीं। इस बरगद के पास अब थाना और पेड़ के नीचे एक कुर्सी पर कोई लाल पगड़ी बाँधे बैठा हुआ था। उसके आसपास दस–बीस और लाल पगड़ीवाले हाथ बाँधे खड़े थे और एक अधनंगा अकाल का मारा आदमी, जिस पर अभी–अभी चाबुकों की बौछार हुई थी, पड़ा सिसक रहा था। मुझे ख़याल आया, यह मेरा प्यारा देश नहीं है, यह कोई और देश है, यह योरप है, अमरीका है, मगर मेरा प्यारा देश नहीं है, हरगिज नहीं।

इधर से निराश होकर मैं उस चौपाल की ओर चला जहाँ शाम को पिताजी गाँव के और बड़े–बूढ़ों के साथ हुक्का पीते और हँसी–दिल्लगी करते थे। हम भी उस टाट पर कलाबाजियाँ खाया करते। कभी–कभी वहाँ पंचायत भी बैठती थी, जिसके सरपंच हमेशा पिताजी ही होते थे। इसी चौपाल से लगी हुई एक गोशाला थी, जहाँ गाँव भर की गायें रक्खी जाती थीं और हम यहीं बछड़ों के साथ कुलेले किया करते थे। अफसोस, अब इस चौपाल का पता न था। वहाँ अब गाँव के टीका लगाने का स्टेशन और एक डाकखाना था।

उन दिनों इसी चौपाल से लगा हुआ एक कोल्हाड़ा था जहाँ जाड़े के दिनो में ऊख पेरी जाती थी और गुड़ की महक से दिमाग तर हो जाता था। हम और हमारे हमजोली घण्टों गंडेरियों के इन्तजार में बैठे रहते थे और गंडरियाँ काटने वाले मजदूरों के हाथों की तेजी पर अचरज करते थे, जहाँ सैकड़ों बार मैने कच्चा रस और पक्का दूध मिलाकर पिया था।

यहाँ आसपास के घरों से औरतें और बच्चे अपने–अपने घड़े लेकर आते और उन्हें रस से भरवाकर ले जाते। अफसोस, वह कोल्हू अभी ज्यों के त्यों गड़े हुए हैं, मगर देखो, कोल्हाड़े की जगह पर अब एक सन लपेटने वाली मशीन है और उसके सामने एक तम्बोली और सिगरेट की दुकान है। इन दिल को छलनी करने वाले दृश्यों से दुखी होकर मैने एक आदमी से जो सूरत से शरीफ नजर आता था, कहा–बाबा, मैं परदेशी मुसाफिर हूँ, रात भर पड़े रहने के लिए मुझे जगह दे दो। इस आदमी ने मुझे सर से पैर तक घूरकर देखा और बोला–आगे जाओ, यहाँ जगह नहीं है।

मैं आगे गया और यहाँ से फिर हुक्म मिला– आगे जाओ। पाँचवी बार सवाल करने पर एक साहब ने मुठ्ठी भर चने मेरे हाथ पर रख दिये। चने मेरे हाथ से छूटकर गिर पड़े और आँखों से आँसू बहने लगे। हाय, यह मेरा प्यारा देश नहीं है, यह कोई और देश है। यह हमारा मेहमान और मुसाफिर की आवभगत करने वाला प्यारा देश नहीं, हरगिज नहीं।

मैने एक सिगरेट की डिबिया ली और एक सुनसान जगह पर बैठकर बीते दिनों की याद करने लगा कि यकायक मुझे उस धर्मशाला का ख़याल आया जो मेरे परदेश जाते वक्त बन रहा था। मैं उधर की तरफ लपका कि रात किसी तरह वहीं काटें,

मगर अफसोस, हाय अफसोस, धर्मशाला की इमारत ज्यों की त्यों थी, लेकिन उसमें गरीब मुसाफिरों के रहने के लिए जगह न थी।

शराब और शराबखोरी, जुआ और बदचलनी का वहाँ अड्डा था। यह हालत देखकर बरबस दिल से एक ठण्डी आह निकली, मैं जोर से चीख़ उठा नहीं–नहीं और हजार बार नहीं यह मेरा वतन, मेरा प्यारा देश, मेरा प्यारा भारत नहीं है। यह कोई और देश है। यह योरप है, अमरीका है, मगर भारत हरगिज नहीं।

अँधेरी रात थी। गीदड़ और कुत्ते अपने राग अलाप रहे थे। मैं दर्दभरा दिल लिये उसी नाले के किनारे जाकर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करूँ? क्या फिर अपने प्यारे बच्चों के पास लौट जाऊँ और अपनी नामुराद मिट्टी अमरीका की ख़ाक में मिलाऊँ? अब तो मेरा कोई वतन न था, पहले मैं वतन से अलग जरूर था मगर प्यारे वतन की याद दिल में बनी हुई थी। अब बेवतन हूँ, मेरा कोई वतन नहीं।

इसी सोच–विचार में बहुत देर तक चुपचाप घुटनों में सिर दिये बैठा रहा। रात आँखों ही आँखों में कट गयी, घड़ियाल ने तीन बजाये और किसी के गाने की आवाज कानों मे आयी। दिल ने गुदगुदाया, यह तो वतन का नग्मा है, अपने देश का राग है। मै झट उठ खड़ा हुआ। क्या देखता हूँ कि पन्द्रह–बीस औरतें, बूढ़ी, कमजोर, सफेद धोतियाँ पहने, हाथों मे लोटे लिये स्नान को जा रही हैं और गाती जाती हैं–

प्रभु, मेरे अवगुन चित न धरो

इस मादक और तड़पा देने वाले राग से मेरे दिल की जो हालत हुई उसका बयान करना, मुश्किल है। मैंने अमरीका की चंचल से चंचल, हँसमुख से हँसमुख सुन्दरियों की अलाप सुनी थी और उनकी जबानों से मुहब्बत और प्यार के बोल सुने थे जो मोहक गीतों से भी ज्यादा मीठे थे। मैंने प्यारे बच्चों के अधूरे बोलों और तोतली बानी का आनन्द उठाया था। मैंने सुरीली चिड़ियों का चहचहाना सुना था। मगर जो लुत्फ, जो मजा, जो आनन्द मुझे गीत में आया वह जिन्दगी में कभी और हासिल न हुआ था। मैंने खुद गुनगुनाना शुरू किया–

प्रभु, मेरे अवगुन चित न धरो

तन्मय हो रहा था कि फिर मुझे बहुत से आदमियों की बोलचाल सुनाई पड़ी और कुछ लोग हाथों में पीतल के कमण्डल लिये शिव शिव, हर, हर गंगे गंगे, नारायण–नारायण कहते हुए दिखाई दिये। मेरे दिल ने, फिर गुदगुदाया, यह तो मेरे देश प्यारे देश की बातें हैं। मारे खुशी के दिल बाग–बाग हो गया।

मैं इन आदमियों के साथ हो लिया और एक दो तीन चार पाँच छः मील पहाड़ी रास्ता पार करने के बाद हम उस नदी के किनारे पहुँचे जिसका नाम पवित्र है, जिसकी लहरों में डुबकी लगाना और जिसकी गोद में मरना हर हिन्दू सबसे बड़ा पुण्य समझता है। गंगा मेरे प्यारे गाँव से छः सात मील पर बहती थी और किसी जमाने में सुबह के वक़्त घोड़े पर चढ़कर गंगा माता के दर्शन को आया करता था। उनके दर्शन की कामना मेरे दिल में हमेशा थी।

यहाँ मैनें हजारों आदमियों को इस सर्द, ठिठुरते हुए पानी में डुबकी लगाते देखा। कुछ लोग बालू पर बैठे गायत्री मन्त्र जप रहे थे। कुछ लोग हवन करने में लगे हुए थे। कुछ लोग माथे पर टीके लगा रहे थे। कुछ और लोग वेदमन्त्र सस्वर पढ़ रहे थे। मेरे दिल ने फिर गुदगुदाया और मैं जोर से कह उठा– हाँ हाँ, यही मेरा देश है, यही मेरा प्यारा वतन है, यही मेरा भारत है। और इसी के दर्शन की, इसी की मिट्टी में मिल जाने की आरजू मेरे दिल में थी।

मैं खुशी में पागल हो रहा था। मैने अपना पुराना कोट और पतलून उतार फेंका और जाकर गंगा माता की गोद में गिर पड़ा, जैसे कोई नासमझ, भोला–भाला बच्चा दिन भर पराये लोगों के साथ रहने के बाद शाम को अपनी प्यारी माँ की गोद मे दौड़कर चला आये, उसकी छाती से चिपट जाए। हाँ, अब अपने देश में हूँ। यह मेरा प्यारा वतन है, यह लोग मेरे भाई, गंगा मेरी माता है।

मैंने ठीक गंगाजी के किनारे एक छोटी सी झोपड़ी बनवा ली है और अब मुझे सिवाय राम नाम जपने के और कोई काम नहीं। मैं रोज शाम–सवेरे गंगा–स्नान करता हूँ और यह मेरी लालसा है कि इसी जगह मेरा दम निकले और मेरी हड्डिया गंगा माता की लहरों की भेंट चढ़ें।

मेरे लड़के और मेरी बीवी मुझे बार–बार बुलाते हैं, मगर अब मैं यह गंगा का किनारा और यह प्यारा देश छोड़कर वहाँ नहीं जा सकता। मैं अपनी मिट्टी गंगाजी को सौपूँगा। अब दुनिया की कोई इच्छा, कोई आकांक्षा मुझे यहाँ से नहीं हटा सकती, क्योंकि यह मेरा प्यारा देश, मेरी प्यारी मातृभूमि है और मेरी लालसा है कि मैं अपने देश में मरूं। ■

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion Rs.	Inaugural Offer Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

* Fifth colour: extra charges will be levied. **Note: GST 5% will be applicable on the above tariff.**

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm

Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *CNRB0019009;* ***Bank:*** *Canara Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey

Sr. Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022

Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237

E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indiandairyassociation.org

एक्सापार

AYURVET
A wholly owned subsidiary of Zenex Animal Health India Private Ltd

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे
- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

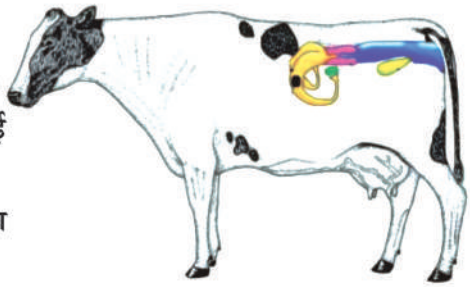

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें। **1800-123-3734**
सोम-शुक्र प्रातः 9 से 6 बजे तक

AYURVET आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः info@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान आधुनिक अनुसंधान

RNI No.: DELHIN/2017/74023

Amul
The Taste of India

अमूल दूध पीता है इंडिया

अमूल दूध

एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध.
यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है,
इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: /amul.coop | /amul_coop | /amultv | /amul_India | Visit us at http://www.amul.com

11430665HIN

प्रकाशक व मुद्रक हरिओम गुलाटी द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट, ए–89/1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन, आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना